Unit 1

Meaning, Definition and nature of Research:

→ खोज करना
→ लक्ष्य या उद्देश्य का अनुगामी
→ उद्देश्य को आधार बनाकर क्रमबद्ध व्यवस्थित वैज्ञानिक तरीके से उसे प्राप्त करने की कला

अंग्रेजी शब्द - Research
↓
पुन: खोज करना /
नए उद्देश्यों की प्राप्त करना

" अनुसंधान/शोध किसी विषय समस्या, उद्देश्य तक पहुँचने या समाधान करने हेतु उसको आधार बनाकर बार-बार उसकी खोज करना तथा उसके आधार पर नए सिद्धांतों, अवधारणाओं का निर्माण करना है

जेम्स ड्रेवर → किसी क्षेत्र में ज्ञान अथवा सत्यापन हेतु की जाने वाली क्रमबद्ध खोज को शोध कहा जाता है

Characteristics of Research
विशेषताएं

1. वस्तुनिष्ठता (objectivity)
2. निश्चयात्मकता (Definiteness)
3. विश्वसनीयता (Reliability)
4. वैधता (validity)

Internal — कारण और प्रभाव के संबंध में अधिक सत्य → विश्वसनीयता
External — अध्ययन को प्रभावित करने वाले कारक → सामान्यीकरण

Accuracy यथार्थता
Generalization सामान्यीकरण

5. कार्यकारण सम्बन्ध की महत्ता Importance of Cause & effect)
6. अनुसंधान चक्रीय प्रक्रिया है (Research is Circular)
7. तार्किकता (Logical)
8. अनुभवात्मक आधारित संकल्पना (Experiential Research)

प्रकृति
वस्तुनिष्ठ (Objective)
तथ्यात्मक (factual)
वैज्ञानिक (Scientific)
बौद्धिकता से युक्त एवं तार्किक (Logical)
पूर्वाग्रह (Bias) से मुक्त (Bias free)
नवीनता (New)
विश्लेषणात्मक (Analytic)

यह विधि पुरानी त्रुटियों को शुद्ध कर नए-नए ज्ञान एवं सिद्धांतों को सुधारने एवं स्थापित करने वाली प्रकृति का पालन करती है

उद्देश्य अनुसंधान के उद्देश्यों को 4 भागों में बांटा जाता है

	कार्य प्रकृति	
Theoretical	व्याख्यात्मक	- नवीन सिद्धांतों एवं नियमों का प्रतिपादन
Veriable	दार्शनिक	- दर्शन के आधार पर अंतिम परिणाम
factual	वर्णनात्मक	→ तथ्यों की खोज कर उनका विश्लेषण ऐतिहासिक अनुसंधानों के प्रकार का सहारा
Practical	विकासात्मक	→ क्रियात्मक अनुसंधानों का सहारा → केवल उपयोगिता को ही महत्व

* नि. लि. उद्देश्य
- नवीन तथ्यों की खोज करना.
- नवीन तथ्यों की खोज के साथ साथ पुराने तथ्यों की जाँच तथा मूल्यांकन
- किसी विशेष स्थिति का सही वर्णन कर समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना
- किसी सिद्धांत के अनुक्रमों, पारस्परिक सम्बन्धों तथा किसी घटना के साथ सह सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त करना
- अनुसंधान हेतु नए वैज्ञानिक उपकरणों एवं सिद्धांतों का विकास करना

Importance of Research (1.5)

- विस्तारित तथा परिमार्जित (Confined) करने में सहायक
- समाज में नए ज्ञान एवं विचारों का प्रसार
- किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक
- व्यक्ति के बौद्धिक चिन्तन (Intellectual Think) एवं विकास को गति प्रदान करता है
- यह किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह को समाप्त करने में सहायक सिद्ध होता है।
- किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वैज्ञानिक तरीकों का प्रतिपादन करता है।
- इसका महत्व किसी भी समस्या का समाधान प्रस्तुत करने में प्रयुक्त होता है।

1.2 Research approach समाजशास्त्र के शोधकर्ताओं के मध्य शोध के दो प्रमुख उपागम प्रत्यक्षवाद और उत्तर प्रत्यक्षवाद प्रसिद्ध है।

परिणाम के आधार पर

प्रत्यक्षवाद (Positivism)

फ्रांसीसी विचारक ऑगस्ट कॉम्टे जनक

प्रत्यक्षवाद की व्याख्या : Course of positive philosophy (1842)
The system of positive polity (1851)

कॉम्टे की अध्ययन पद्धति जो विज्ञान पर आधारित

→ कॉम्टे के अनुसार, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियमों द्वारा व्यवस्थित व निर्देशित होता है।

→ अतः इसे केवल विज्ञान की विधियों द्वारा समझा जा सकता है, न कि धार्मिक या तात्विक आधारों पर

• इस प्रकार निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण पर आधारित वैज्ञानिक विधियों द्वारा सब कुछ समझना और उससे ज्ञान प्राप्त करना ही प्रत्यक्षवाद है

- कॉम्टे के अनुसार प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण के चरण
  • सर्वप्रथम अध्ययन - विषय को चुनते हैं
  ↓
  • अवलोकन या निरीक्षण द्वारा उस विषय से सम्बन्धित प्रत्यक्ष होने वाले तथ्यों को एकत्रित करते हैं।
  ↓
  • इसके पश्चात इन तथ्यों का विश्लेषण करके सामान्य विशेषताओं के आधार पर इनका वर्गीकरण किया जाता है
  ↓
  • तत्पश्चात विषय से सम्बन्धित कोई निष्कर्ष निकालते हैं।

विशेषताएं / मान्यताएं :

- प्रत्यक्षवाद का लक्ष्य केवल घटनाओं का वर्णन करता है, जिसे हम प्रत्यक्ष रूप से देख (अनुभव) या निरीक्षण कर सकते हैं। इसके अन्तर्गत किसी भी स्तर पर काल्पनिक चिन्तन का सहारा नहीं लिया जाता।

→ वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सत्य को उजागर, मात्रात्मक विधि पर बल

→ घटनाओं, सामाजिक घटनाएं - नियमों के आधार पर घटित के पद्धति से खोजा जा सकता

→ वैज्ञानिक दृष्टिकोण वैज्ञानिक कार्यप्रणाली

→ धार्मिक व दार्शनिक विचारों से दूर रखता है

→ उपयोगितावादी विज्ञान : और उस रूप में विश्वास करता है कि प्रत्यक्षवाद के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को सामाजिक पुनर्निर्माण के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है

उत्तर प्रत्यक्षवाद Post positivism

- यह तर्क देता है कि तार्किक तर्क के साथ आनुभविक टिप्पणियों को जोड़कर एक घटना के बारे में उचित अनुमान लगाया जा सकता है

→ वैज्ञानिक के सोचने और काम करने के तरीके और दैनिक जीवन में हमारे सोचने के तरीके अलग नहीं हैं कोई अंतर नहीं है दोनों में, केवल अंश में अंतर

→ सभी अवलोकन अस्थिर हैं और इसमें त्रुटि है। और यह सभी सिद्धांत पुनः प्रयोज्य (usable) हैं

→ तीन विकासों पर बल :
1. मात्रात्मक और गुणात्मक रणनीति का प्रयोग
2. प्रश्न शोध पर आधारित रणनीति की इच्छा
3. इसके पैटर्न का तरीका मात्रात्मक बनाम गुणात्मक होता है।

शोध के चरण या सोपान (Step of Research)

अनुसंधान एक क्रमिक प्रक्रिया है, वैज्ञानिक विधि

8 चरण

Identify the problem समस्या का चयन
↓
making of Hypothesis परिकल्पनाओं का निर्माण
↓
Development of Research design शोध प्रारूप या अभिकल्प का विकास
↓
Selecting samples - न्यायदर्श / प्रतिदर्श चयन
↓
Writing a research proposal अनुसंधान प्रस्ताव लेखन
↓
Collection of Data प्रदत्तों का एकत्रीकरण
↓
processing and analysis Data प्रदत्तों का संस्करण और विश्लेषण
↓
Writing a Research Report अनुसंधान रिपोर्ट लेखन

शोध अनुसंधान के प्रकार

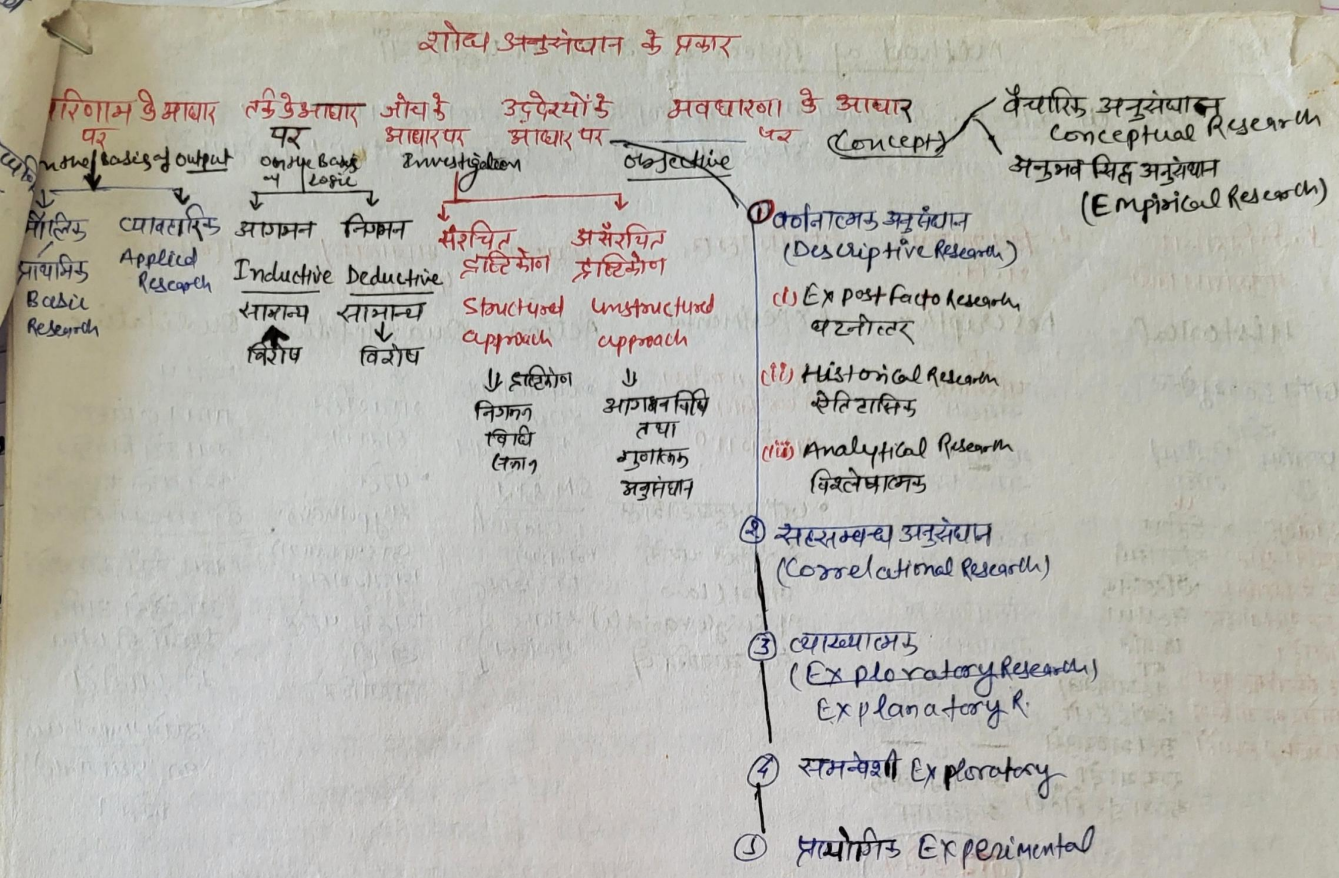

संचार शोध के प्रकार, ③

① मौलिक

मौलिक शोध सैद्धांतिक प्रकृति का शोध होता है जिसका उद्देश्य ज्ञान की वृद्धि करना होता है
नित नई और परिवर्तनशील परिस्थितियों के साथ समन्वय बैठाने और नई चुनौतियों का सामना करने के लिए नए-नए सिद्धांतों और नियमों का अनुसंधान मौलिक शोध के अन्तर्गत आता है

② अनुप्रयुक्त शोध

- सामाजिक जीवन के व्यावहारिक पक्ष से सम्बन्धित शोध को अनुप्रयुक्त या व्यावहारिक शोध कहा जाता है।
- सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक उपचार की दिशा में टीवी के लिए प्रोग्रामों में जरूरी सिद्धांतों का निर्माण करना ही व्यावहारिक शोध की विषय-वस्तु है।

③ क्रियात्मक शोध

- क्रियात्मक शोध में वैयक्तिक साक्षात्कार पद्धति और सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करते हैं।
- कभी-कभी उसमें प्रश्नावली प्रविधि का प्रयोग भी किया जाता है

Method of Research. शोध की पद्धतियाँ

बेस्ट एवं काहन :- द्वारा किया गया वर्गीकरण सबसे अच्छा माना जाता है। उनके अनुसार अनुसंधान की 6 प्रमुख विधियाँ / पद्धतियाँ हैं

1. ऐतिहासिक अनुसंधान विधि — Historical

→ जॉन डब्ल्यू बेस्ट

स्रोत: प्राथमिक, द्वितीयक / गौण

- करलिंगर → प्राथमिक स्रोत एक ऐतिहासिक प्रदत्त मूल भण्डार होता है। यह किसी महत्वपूर्ण अवसर का मौलिक अभिलेख होता है।
- द्वितीयक स्रोत किसी ऐतिहासिक घटना या स्थिति का वह अभिलेख / रिकॉर्ड है जो मूल भण्डार से एक या दो कदम दूर होते हैं।

2. विवरणात्मक अ. वि. — Descriptive

- परिभाषित समस्या
- यह समस्या को स्पष्ट करता है
- कल्पनापूर्ण नियोजन आवश्यक है
- संख्यात्मक एवं गुणात्मक
- वर्तमान स्थिति का वर्णन व विश्लेषण
- अप्रयोगात्मक अनुसंधान

वानडैलेन

1. Survey Study — सर्वेक्षण
   - → School Survey
   - → Work analysis
   - → Documentary analysis
   - → Public opinion survey
   - → Community Survey
2. Inter Relation-ship Studies — अंतरसंबंध
   - Case study
   - Casual Comparative Study या Ex post facto Research
   - Correlation Study
3. Develop-mental Study — विकासात्मक
   - Longitudinal
   - Cross Section
   - Trend

3. प्रयोगात्मक — Experimental

- परिकल्पना परीक्षण की एक विधि
- क्या होगा?
- जॉन स्टुअर्ट मिल के एकल चर के नियम (Law of single variable) पर आधारित है

4. क्रियात्मक — Action

- व्यावसायिक समस्याओं का समाधान
- SM-कोरे: व्यवसायी निर्णय, निर्देशित, सुधार, मूल्यांकन

5. मात्रात्मक / परिमाणात्मक — Quantitative

- भावरहित होता है
- पहले Hypothesis का (उपकल्पना) निर्धारण होता
- सिद्धांत पहले से ही निर्धारित

6. गुणात्मक — Qualitative

- उद्देश्य: मानव व्यवहार तथा उसे नियंत्रित करने वाले कारणों को समझना होता है
- → क्या, कहाँ, कब, क्यों और कैसे आदि प्रश्नों की जाँच की जाती है
- → इसमें Hypothesis का प्रयोग नहीं करते।

शोध प्रविधियाँ :-

साक्षात्कार

शोध सामग्री के संग्रहण का एक माध्यम साक्षात्कार
- आमने सामने बैठकर बातचीत चर्चा, संवाद द्वारा शोध सामग्री एकत्र
- प्रेक्षण विधि में केवल अनेक व्यवहारों का अवलोकन, प्रश्न
- साक्षात्कार- प्रश्न पूछता है
- व्यवहार-विज्ञान में साक्षात्कार का प्रयोग चयन, उपचार, निदान मानव विकास के आरम्भिक वर्षों में सा. का प्रयोग मनुष्य के स्वभाव उसके व्यक्तित्व के विषय में जानकारी [illegible] उद्देश्यों के लिए

निदर्शन का चयन

- सामाजिक शोध एवं सर्वेक्षण की एक विधि
- शोधकर्ता शोध करने से पूर्व यह सुनिश्चित करता है कि तथ्यों का संकलन, वह समूह के सभी सदस्यों से सम्पर्क स्थापित करके करेगा या कुछ सदस्यों को प्रतिनिधि के रूप में चुनकर तथ्यों का संकलन करेगा।
- सम्पूर्ण - census method संगणना (जनगणना)
- प्रतिनिधि - sampling method
- या शोध सर्वेक्षण। CD < CM, SM

तथ्य संकलन

- इसके अन्तर्गत यह निर्धारित किया जाता है कि कौन सी प्रविधियाँ प्रयोग की जाएं क्योंकि तथ्यों के संकलन करने की क्रिया की वैधता, परिशुद्धता व्यापकता पर आँकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन एवं आगामी प्रक्रियाओं की सफलता इन्हीं प्रविधियों पर आधारित होती है
- → शोध विषय से सम्बंधित प्रकाशित पुस्तकें पत्र पत्रिकाएँ अप्रकाशित साहित्य का अध्ययन
- तथ्यों का सारणीयन
- तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अवलोकन

- मोजर के अनुसार अवलोकन वैज्ञा. अनु. की शास्त्रीय विधि है
- अवलोकन से तात्पर्य देखना, निरीक्षण करना होता है अर्थात अवलोकन प्रविधि में प्राथमिक सामग्री संकलन का महत्वपूर्ण स्रोत होती है
- → इन्द्रियों के उपयोग हेतु प्रयुक्त
- → सम्पूर्ण अध्ययन अनुभव आधारित
- → वैज्ञानिक सुनिश्चितता एवं प्रकाशी
- → यह घटनाओं एवं तथ्यों की प्रत्यक्ष विधि है शोधकर्ता घटना को प्रत्यक्ष देखता

केस अध्ययन — केस (स्टडी)

- भावनात्मक मनोवैज्ञानिक पहलू पर ध्यान
- संख्या के स्थान पर विश्लेषण पर बल
- Qualitative विधि
- गहन अध्ययन
- एक या अनेक घटनाएं
- पीवीयंग: सामाजिक इकाई की संभावना या उनके विश्लेषण करना

देशान्तरीय अध्ययन

- पारस्परिक सम्बंध-अध्ययन का एक रूप है
- → विषय ↑↓
- = अनुदैर्ध्य
- एक चर का एक लंबे समय तक अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष
- ट्रेण्ड स्टडी
- कोहर्ट स्टडी
- पैनल स्टडी

संचार शोध - Evalution

→ संचार शोध का तात्पर्य जनसंचार प्रक्रिया एवं संचार के प्रभावों के वैज्ञानिक अध्ययन से होता है
→ संचार शोध के अन्तर्गत निरीक्षण-परीक्षण के प्रयोग के आधार पर वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करके संचार के क्षेत्र से सम्बन्धित विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयास किया जाता है
→ संक्षेप में कहें तो सामाजिक घटनाओं पर संचार प्रभाव के सम्बन्ध में सत्य की खोज ही संचार शोध कहलाता है।
→ आज मीडिया और जनसंचार आधुनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन चुके हैं और ये हमारे जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर रहे हैं। मीडिया पर हमारी निर्भरता ही हमें उसकी प्रक्रिया और प्रभाव को समझने की प्रेरणा प्रदान करती है

** संचार शोध का इतिहास.

- सबसे पहले अमेरिका में उच्च शिक्षा में संचार के क्षेत्र में संस्थाओं के विकास के अध्ययन की परम्परा की शुरुआत हुई।
- यह परम्परा आगे चलकर यूरोपीय संघ द्वारा भी अपनाई गई।
- समाज विज्ञान में मानवता विकास के सन्दर्भ में सर्वप्रथम संचार शोध के इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष वर्ष 1955 में काज एवं लेयरफील्ड ने प्रस्तुत किया
- यद्यपि संचार शोध परम्परा की शुरुआत वर्ष 1950 में ही हो गई थी। तथापि उस समय उसका स्वरूप व्यवस्थित नहीं था।
- कुछ समय पश्चात जनसंचार के प्रतिमानों में सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन एवं उनका सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव, शिक्षा, पत्रकारिता एवं प्रकाशन के इतिहास का प्रकाशन, आदि संचार शोध की विषय वस्तु के रूप में शामिल हो गए।
- कुछ संचार वैज्ञानिकों ने अपने ऐतिहासिक शोध अध्ययन में संचार की कुछ संगठित संस्थाओं के क्षेत्र का निर्धारण किया है इन वैज्ञानिकों में हेराल्ड लासवेल, बेरेल्सन, डेनिस मैक्विल
- रोजर और बेल के नाम उल्लेखनीय हैं।
→ संचार शोध का ऐतिहासिक विश्लेषण करने वाले विद्वानों में कार्ल हॉलैण्ड, सीट्रोम, ~~बेल के म्म~~ कैफी एवं लिशोयार, वार्टेल, शेजर्स एवं श्रूमेकर आदि प्रमुख हैं
→ विज्ञापन के क्षेत्र में संचार शोध की शुरुआत अमेरिकी गृहयुद्ध के समय से ही होने लगी थी।
→ पश्चिमी के विकसित देशों जैसे अमेरिका, यूरोप एवं जर्मनी में संचार अध्ययन एवं शोध के क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण अनुसंधानों एवं विस्तृत अध्ययनों के फलस्वरूप हुए क्रान्तिकारी परिवर्तन का प्रभाव भारत पर भी विशेष रूप से पड़ा, जिससे भारत में भी संचार क्षेत्र में अध्ययन और अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रक्रिया प्रारम्भ हुई।
→ पाश्चिमी देशों अर्थात् विकसित देशों में संचार शोध का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक होता है, जो उपभोक्ता की प्रवृत्ति को समझने एवं प्रभावित करने की दृष्टि से किया जाता है
→ जनसंचार माध्यम ने धनी वर्ग को और धनी तथा गरीबों को और गरीब बनाने का कार्य किया है।
→ अतः विकासशील और गरीब देशों में संचार शोध का आयाम एवं प्रकृति धनी और शक्तिशाली देशों से भिन्न होनी चाहिए।

संचार शोध का अर्थ: संचार शोध का प्राथमिक उद्देश्य खोज, व्याख्या और वैज्ञानिक तथ्यों की विस्तृत विविधता पर मानव ज्ञान की उन्नति के लिए तरीकों और प्रणालियों का विकास करना होता है। संचार शोध वैज्ञानिक विधि का उपयोग

औपचारिक अध्ययन अपेक्षाकृत नयापन और आगे, ज्ञान द्वारा केन्द्र

शोध के तीन मुख्य रूप होते हैं खोजपूर्ण शोध - यह नई समस्याओं की संरचना की पहचान करता है।
रचनात्मक शोध - यह एक समस्या का समाधान विकसित करता है।
अनुभवजन्य शोध - यह एक अनुभव का उपयोग करते हुए समाधान की व्यावहारिकता का परीक्षण करता है।

* संचार शोध में संचार से हमारे जीवन पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

संचार शोध की अवधारणा:(4.1) — अवधारणा को सामान्यतया: प्रत्यय अथवा सम्बोध भी कहा जाता है।
- वैज्ञानिक संचार शोध में अवधारणा का प्रयोग यथार्थ के प्रत्यक्षीकरण, वर्गीकरण तथा बोध के लिए किया जाता है।
- सिद्धांत रचना में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। सिद्धांत रचना के प्रथम स्तर पर मूर्त घटनाओं का अवधारणाओं के रूप में अमूर्तिकरण किया जाता है। तत्पश्चात इन्हें तर्क संगत आधार पर व्यवस्थित कर सिद्धांत में परिणित किया जाता है।
- अवधारणाएं स्थिर नहीं होती हैं, अपितु इनके अर्थ में निरंतर संशोधन व परिवर्तन होता रहता है।
- किसी भी वैज्ञानिक व्यवस्था की एक विशेष शब्दावली होती है इसके अन्तर्गत शब्द तो प्रायः वही होते हैं, जिनका उपयोग हम दिन-प्रतिदिन की भाषा में करते हैं, परंतु वैज्ञानिक व्यवस्था में इनके विशेष अर्थ होते हैं। ऐसे बहुत से शब्द विशेषकर संचार में जिन्हें हम अपनी वैज्ञानिक शब्दावली के अन्तर्गत भी मानते हैं, इनका सामान्य भाषा में प्रयोग होता है।
- संचार शोध को मानव ज्ञान का एक अविभाज्य अंग माना जाता है।
  संचार → कला, रचनात्मक, विज्ञान
  संचारशोध को विज्ञान के रूप में उचित तरीके से वर्णित किया जाता है, क्योंकि यह मुख्य सिद्धांतों पर आधारित होता है, जिन्हें सत्यापित किया जा सकता है और इन्हें प्रभावी बनाकर उपयोग में लाया जा सकता है।
- जब हम संचार के वैज्ञानिक अर्थ की खोज करते हैं, तो यह प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच विचार, मत, और जानकारी के संचार, संचरण या आदान-प्रदान के कार्य को सन्दर्भित करता है। हालाँकि, अधिकांश संचार मौखिक माध्यमों या बोले गए शब्दों के माध्यम से होता है
  संचार भी लिखित शब्दों, ध्वनि, संकेत और मुद्राओं, चित्रों, आरेखों, ग्राफिक्स इत्यादि से भी

1.5: - संचार शोध की विशेषताएँ या महत्व: - संचार शोध की प्रकृति अन्तर अनुशासनिक पाई जाती है, जो सिद्धांत तथा प्रविधि दोनों के मामलों में समाज और व्यावहारिक विज्ञान से निर्देशित होती है।
- संचारशोध एक उद्देश्यपूर्ण, सुव्यवस्थित बौद्धिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी सैद्धांतिक अथवा व्यावहारिक समस्या के समाधान का प्रयास किया जाता है
- संचार शोध एक वैज्ञानिक अन्वेषण पद्धति है। इस आधार पर एक व्यवस्थित, नियंत्रित, निरपेक्ष, वस्तुनिष्ठ, गहन तथा आनुभाविक अध्ययन होता है
- संचार शोध के द्वारा किसी नए तथ्य, सिद्धांत, विधि या वस्तु की खोज की जाती है अथवा प्राचीन तथ्य, सिद्धांत, विधि या वस्तु में परिवर्तन किया जाता है।
- संचार शोध में सम्बंधित समस्या के अध्ययन का आधार ऐसी परिकल्पना अथवा परिकल्पनाएं तर्कवाक्य होते हैं, जिनसे कि आनुभाविक तथा मात्रात्मक अध्ययन में सुविधा होती है।
- संचार शोध चिंतन की एक सुव्यवस्थित एवं परिष्कृत विधि है, जिसके अंतर्गत किसी समस्या के समाधान के लिए विशिष्ट उपकरणों एवं प्रक्रियाओं का प्रयोग होता है।
- इसमें सम्बंधित आँकड़ों का विश्लेषण कठोर वैज्ञानिक तथा सांख्यिकीय पद्धतियों के आधार पर किया जाता है। इस प्रकार, संचारशोध का स्वरूप कुशल, विशिष्ट तथा वस्तुनिष्ठ होता है।
- इसके अन्तर्गत जटिल घटनाक्रम को समझने के लिए विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाता है इस विश्लेषण के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया जाता है।
- इसमें प्राप्त परिणामों तथा सम्बंधों की पुनरावृत्ति की जाती है ताकि सुनिश्चित तथा सुसंगत निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

Problem

Identify the problem समस्या का चयन

अनुसंधान के पहले चरण में सर्वप्रथम समस्या, घटना व्यवहार या प्रश्न का चयन किया जाता है और जितनी जागरूकता, सतर्कता, जिज्ञासा के साथ समस्या का चयन किया जाता है, शोध समस्या का चयन उतने ही अच्छे ढंग से होता है।

ध्यान रखने योग्य बातें

- अनुसंधानकर्ता की रुचि शोध परियोजना में अवश्य होनी चाहिए
- अवधारणाओं के सूचक, मापन विधि तथा संकेतक आदि पूर्ण रूप से स्पष्ट होना चाहिए।
- शोधकर्ता को विषय की प्रासंगिकता (Relevancy) भी ध्यान रखनी चाहिए। यह। महत्त्वपूर्ण एवं ध्यान रखने योग्य बिंदु है।
- शोध अध्ययन को समय पर उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप ही किया जाना चाहिए। अनुसंधानकर्ता को शोध कार्य के विषय में सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
- शोध अध्ययन के विषय को अंतिम रूप देने के लिए अनुसंधानकर्ता को उससे संबंधित डाटा की उपलब्धता सुनिश्चित कर लेनी चाहिए
- अनुसंधान समस्या के निरूपण से पूर्व उनके नैतिक मुद्दों (Ethical Issues) और उनके समाधान को पहले ही सोच लेना चाहिए!

समस्या के प्रकार : (5)
- सैद्धान्तिक समस्याएं
- सर्वेक्षण सम्बंधी समस्याएं
- सह सम्बन्धात्मक समस्याएं
- व्यावहारिक समस्याएं
- प्रायोगिक समस्याएं

समस्या की विशेषताएं :
→ स्पष्ट एवं मूर्त
→ समाधान किया जा सके
→ नवीन
→ रुचिकर
→ परिकल्पनाओं पर आधारित
→ व्यावहारिक रूप से उपयोगी
→ समस्या समाधान में अधिक धन समय, परिश्रम का अपव्यय न हो

Making of Hypothesis

- अनुसंधान के दूसरे चरण में सभी समस्याओं की पहचान के बाद उससे सम्बन्धित परिकल्पनाओं का निर्माण किया जाता है। यह शोध के विकास का उद्देश्यपूर्ण आधार है।

परिकल्पना । उपकथन, जो किसी समस्या के समाधान की अवधारणा प्रस्तुत करता है
परि — चारों ओर
कल्पना — चिंतन का सम्मिलित रूप

- गुडे एवं हाट्ट → मेथड्स इन सोशल रिसर्च (book) परिकल्पना भविष्योन्मुखी (future oriented) होती है तथा यह एक तार्किक कथन है जिसकी सत्यता का परीक्षण किया जा सकता है।
- करलिंगर → परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के मध्य सम्बन्धों का कथन है।
- परिकल्पना वस्तुत: एक तार्किक कथन, वाक्य पूर्व विचार या पूर्वधारणा है जिसे शोधकर्ता विषयवस्तु की प्रकृति के आधार पर पूर्व निर्मित कर लेता है एवं जिसकी सत्यता की जाँच वह शोध के समय करता है।
- Hypothesis – परिकल्पना (Hindi)

↓ ग्रीक शब्द / शब्द
Hypo — Thesis =
Below — theory
नीचे — विचार। सिद्धांत
→ Below theory (सिद्धांत से नीचे) सिद्धांत का पूर्वकथन)

प्राक्कल्पना
प्राक् — कल्पना → पूर्व विचार या पूर्व सिद्धांत
पूर्व — विचार। सिद्धांत
- कच्चा सिद्धांत
- अस्थायी अनुमान
- परीक्षण हेतु प्रस्तुत की गई एक प्रस्थापना
- काम चलाऊ, सामान्यीकरण
- कल्पनात्मक विचार
- पूर्वानुमान कथन
- अनुमानात्मक कथन
- अप्रमाणित सिद्धांत

प्रकार :

शोध H	शून्य H	सांख्यिकीय H
करके सीखने	अप्रमाणित H	विशेष संकेतों का प्रयोग –
कार्यात्मक H	अशुद्ध H	पदों को व्यक्त करने के लिए
Directional H	नकारात्मक H	
Non Directional	(दो चरों के बीच कोई संबंध नहीं) सात्मक	

विशेषताएं : गुडे एवं हॉट - Methods in social research.

→ स्पष्टता, विशिष्टता, सिद्धांतों से सम्बन्ध स्थापित करना अनुभव योग्य सिद्धांत, उपलब्ध प्रविधियों से सम्बन्ध वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठता

→ तथ्यात्मक, प्राकृतिक नियमों के अनुरूप निगमनात्मक चिंतन (Deductive contemplation) स्पष्टता, सरलता, यह सिद्धांतों, तथ्यों, नियमों अवधारणाओं से मुक्त

- प्राक्कल्पना को मितव्ययी होना चाहिए तथा पुष्टि हेतु प्रविधियों की उपलब्धता भी होनी चाहिए

प्राक्कल्पना की प्रकृति :-

→ प्राक्कल्पना में मौजूद सभी सन्दर्भ बिन्दु क्रियात्मक, प्रत्यात्मक तथा घोषणात्मक प्रकृति के होने चाहिए
→ परीक्षा के योग्य होना चाहिए
→ प्राक्कल्पना की प्रकृति ऐसी हो कि वह
• अनुसंधान को बढ़ावा देने में सहायक हो
→ सभी शोध प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर देने में सक्षम हो

महत्व ! ① तथ्यों की सार्थकता का निर्धारण
② समस्या समाधान के बीच कड़ी का काम कर समस्या का समाधान
③ समस्या के क्षेत्र का निर्धारण
④ H प्रदत्तों (Data) के संकलन का आधार प्रस्तुत कर नवीन अनुसंधानों का मार्ग प्रशस्त करती है।
⑤ यह अनुसंधान की सम्पूर्ण कार्य रेखा को बताती है। तथा समुचित एवं प्रभावी उपकरणों के चयन में सहायक होती है।

साधारण परिकल्पना Normal Hypothesis
ऐसी परिकल्पना जिसमें चरों की संख्या अधिकतम दो होती है एवं इन चरों में अनुमान जन्य संबंध का उल्लेख किया जाता है।

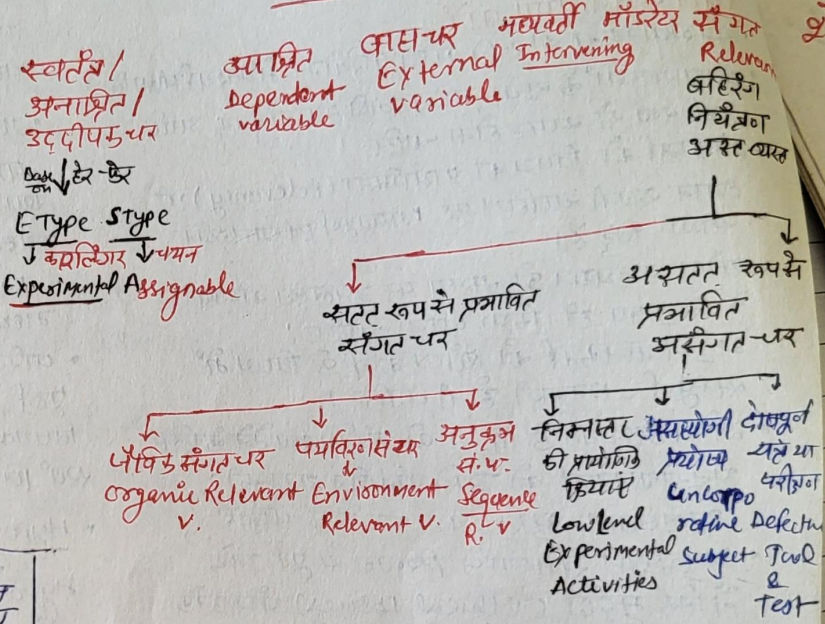

→ जटिल परिकल्पना Complex hypothesis >2 चर
2 से अधिक चरों का प्रयोग कर उसके बीच अनुमान जन्य संबंध का उल्लेख किया जाता है उसे जटिल
– इस प्रकार की परिकल्पना में आश्रित एवं स्वतंत्र चर दो से अधिक होते है
जैसे- धूम्रपान और नशीली दवाओं से कैंसर, तनाव

→ सांख्यिकीय Statistical – सांख्यिकी पदों में
↳ शोध परिकल्पना H ! शून्य परिकल्पना H_0

→ कार्यकारी परिकल्पना Working Hypothesis
यह परिकल्पना किसी ना किसी सिद्धांत पर आधारित या सिद्धांत से प्रेरित होती है
→ यह शोध में अस्थाई रूप से अपनाई जाती है।
→ इससे शोध से संबंधित तथ्यों के बीच संबंध को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है
→ जैसे शोध की प्रक्रिया आगे बढ़ती है, कार्यकारी परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है, और उसे पुष्टि संशोधित या त्याग कर दिया जाता है

शून्य / Null H → कार्यकारी H के विपरीत
दो चरों के बीच शून्य अंतर या शून्य संबंध का होना 0 मानी कहलाती है इसकी रचना इसे निरस्त करने के उद्देश्य से ही किया जाता है उसे H_0 से निर्दिष्ट किया जाता है

वैकल्पिक / Alternative H – H_0 के विपरीत
जब H_0 को अस्वीकार्य / निरस्त कर दिया जाता है ... सांख्यिकीय परिकल्पना।

चर (Variable)

• Variable किसी घटना, क्रिया या प्रक्रिया को, जिसका अध्ययन किया जा रहा है, प्रभावित करने वाला कारक।
• प्रयोगात्मक विधि चरों पर आधारित होती है।
• प्रयोगात्मक विधि का मुख्य उद्देश्य कारण-प्रभाव सम्बन्धों को ज्ञात करना है।

चरों का वर्गीकरण या प्रकार

- स्वतंत्र / अनाश्रित / उद्दीपक चर
  - Base on ↓ हेर-फेर
  - E Type ↓ जोड़तोड़ / हेरफेर — Experimental
  - S Type ↓ चयन — Assignable
- आश्रित — Dependent variable
- बाह्य चर — External variable
- मध्यवर्ती — Intervening
- मॉडरेटर
- संगत / Relevant — बहिरंग नियंत्रण अस्त व्यस्त
  - सतत रूप से प्रभावित संगत चर
    - जैविक संगत चर — Organic Relevant V.
    - पर्यावरण संगत चर — Environment Relevant V.
    - अनुक्रम सं. च. — Sequence R. V
  - असतत रूप से प्रभावित असंगत चर
    - निम्नस्तर की प्रायोगिक क्रियाएँ — Low Level Experimental Activities
    - असहयोगी प्रयोज्य — Uncoopo rative Subject
    - दोषपूर्ण यंत्र या परीक्षण — Defective Tool & Test

विशेषताओं के आधार पर चरों का वर्गीकरण :-
डी. रूमैरो ने

गुणात्मक Qualitative	मात्रात्मक Quantitative	खण्डित / असतत Discrete	निरंतर / सतत Continuous
↓ Traits			सूक्ष्म मात्रा में मापना
अंतर मात्रा × प्रकार ✓	मात्रा संख्या ✓	मान / मूल्य गिनकर निश्चित	→ मात्रा अशुद्ध नहीं होती
प्रजाति, धर्म व्यवसाय, यौन	आयु, बुद्धि, सीखने के प्रयास	परिवार में सदस्यों की संख्या, कमरों की संख्या, बीज की संख्या	निरंतर उपविभाजन संभव — समय, आयु, लम्बाई

शोध में चरों के चयन हेतु आधार :-
• सैद्धांतिक आधार
• शोध प्रारूप
• व्यावहारिक आधार

शोध प्रारूप या शोध अभिकल्प का विकास Development of Research Design

- शोध अभिकल्प एक प्रश्न का उत्तर जानने, परिस्थिति का वर्णन करने या परिकल्पना के निरीक्षण से सम्बन्धित होता है, जो योजनानुसार कार्य करके सम्पूर्ण अनुसंधान पर नियंत्रण करता है।
- शोध अभिकल्प मुख्यतः किसी भी शोध कार्य में पूर्व निर्मित एक योजनाबद्ध रूपरेखा है।

शोध अभिकल्प के उद्देश्य :- • अनुसंधान में उठाए गए प्रश्नों व समस्याओं का उत्तर देना तथा समाधान ढूँढना।

- अनुसंधान में उपस्थित त्रुटियों को दूर कर उसके निष्कर्ष को वैध बनाना
- अनुसंधान को क्रमबद्ध करना
- शोध अध्ययन की स्पष्ट दिशा सुनिश्चित करना

शोध अभिकल्प के प्रकार :- अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप किसी विशेष सामाजिक घटना का उत्तरदायी कारण खोजने में प्रयुक्त प्रारूप

- वर्णनात्मक शोध प्रारूप - इसका उद्देश्य शोध अध्ययन के विषय के बारे में तथ्य संकलित कर उनका एक विवरण प्रस्तुत करना।
- निदानात्मक शोध प्रारूप - किसी शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के वास्तविक कारणों को जानकर उसका निदान करना
- प्रयोगात्मक शोध प्रारूप - सामाजिक घटनाओं एवं व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए अपनाया गया शोध प्रारूप।

व्यावहारिक शोध → (obj.) तत्कालिक अथवा दूरगामी महत्व की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान

मूलभूत शोध → व्यावहारिक शोध का आकार तैयार करना,

मूल्यांकनपरक शोध → / क्रियामुखी शोध . कार्यक्रमों तथा नीतियों की सफलता एवं प्रभावशीलता को आँकने के उद्देश्य

प्रयोगात्मक शोध - स्वतंत्र चरों की आश्रित चरों पर प्रभावों की जाँच

सामाजिक शोध - समाजशास्त्रियों द्वारा सामाजिक सम्बन्ध, सामाजिक समूह, सामाजिक समस्याएँ, सामाजिक अन्तर्क्रियाएं जैसे विषयों पर किए गए शोध को सामाजिक शोध कहते हैं।

शोध अभिकल्प संरचना :- प्रारूप (संरचना) एक प्रकार की रूपरेखा होती है, जिसे शोध के वास्तविक क्रियान्वयन से पहले तैयार किया जाता है।

- यह योजनाबद्ध रूप से तैयार एक ढाँचा होता है जो उस रीति को बताता है। जिसमें आपने अपने शोध की कार्य योजना तैयार की है।
- शोध कार्य - 2 पहलू पर विचार ‹ अनुभवात्मक, विश्लेषणात्मक] कार्यरूप में ये दोनों ही एकसाथ रहते हैं।

↓

चरण

- समस्या को परिभाषित
- शोध विषय पर प्रकाशित सामग्री की समीक्षा
- अध्ययन के व्यापक ढाँचों और इकाई का निर्धारण करना
- प्राक्कल्पना का सूत्रीकरण और चरों को स्पष्ट
- शोध विधियों और तकनीकों का चयन
- शोध का मानकीकरण
- मार्गदर्शी अध्ययन या सांख्यिकीय व अन्य विधियों का प्रयोग
- शोध सामग्री एकत्र करना
- सामग्री का विश्लेषण करना
- व्याख्या करना तथा रिपोर्ट तैयार करना

शोध अभिकल्प संरचना के प्रकार्य एवं प्रयोजन

हर्लेक एवं चैम्पियन ने (3), मैनहाइम (5)

- शोध प्रारूप से शोध कार्य को अभिचालित करने के लिए एक रूपरेखा तैयार की जाती है।
- शोध प्रारूप से शोध की सीमा और कार्यक्षेत्र परिभाषित होता
- शोध प्रारूप से शोधकर्ता को शोध प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं का पूर्वानुमान लगाने का अवसर मिलता है।

२.३ **संचार शोध मापन** :- मापन का तात्पर्य पैमाइश की उस विधि से है, जिसके द्वारा गुणात्मक तथा अमूर्त सामाजिक तथ्यों या घटनाओं को गणनात्मक स्वरूप दिया जाता है। गुणात्मक तथा अमूर्त सामाजिक तथ्यों या घटनाओं को प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग करके
- संचार शोध मापन में संचार के विभिन्न आयामों को प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग करके वांछनीय निष्कर्षों की प्राप्ति की जाती है।

मापन :- किसी भी अवलोकन (observation) को परिमाणात्मक रूप में व्यक्त करना होता है।
- किसी भौतिक पदार्थ के गुण अथवा विशेषताओं के परिमाण को अंकात्मक रूप देने की क्रिया को मापन कहते हैं।
- किसी वस्तु के गुणों को उचित इकाई (unit) में प्रकट किया जाता है।
- पदार्थ का मापन - २ प्रकार से - भौतिक - मनोवैज्ञानिक (दोनों की प्रकृति में अन्तर)
- मनोवैज्ञानिक मापन भौतिक से ज्यादा जटिल होता है।
- मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक मापन मानक व्यवहारों तथा उसमें होने वाले परिवर्तनों का मापन एवं मूल्यांकन करते हैं।
- मापन के द्वारा हमें अतीत के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त होता है साथ ही भविष्य की समस्याओं के समाधान में भी मापन अत्यधिक सहायक है।
- मापन किसी नियम के अनुसार अंक आवण्टन करने की प्रक्रिया होती है। दूसरे शब्दों में ऐसे समझा जा सकता है कि वस्तुओं को किसी नियम के अनुसार अंक प्रदान करने की एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं, जिससे उसके गुणों की मात्रा का पता चलता है।

स्टीवेन्स :- स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की क्रिया को मापन कहते हैं।

मापन के पहलू –
- शील गुणों का निर्धारण
- संक्रियाओं को निश्चित करना
- शील गुणों को मात्रांकित करना

मापन की आवश्यकता और प्रासंगिकता
- → वर्गीकरण
- → पूर्वकथन
- → तुलना
- → परामर्श एवं निर्देशन
- → निदान
- → अन्वेषण

संचार शोध मापन - संचार शोध मापन मूल रूप से तुलना करने की एक प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत संचार से संबंधित किसी भौतिक राशि की मात्रा की तुलना किसी पूर्व निर्धारित मात्रा से की जाती है।
- ये दोनों राशियाँ संचार विश्लेषण से ही सम्बन्धित होती हैं इन राशियों की तुलना द्वारा संचार शोध कार्य के वांछनीय निष्कर्ष की प्राप्ति का प्रयास किया जाता है।

संचार शोध मापन के स्तर :- S. S. स्टीवेन्स - संचार शोध मापन की यथार्थता के आधार पर मापन - चार

मापन के स्तर / मापनी	प्रकृति	मान
Nominal Scale वर्गीकरण नामित	- समानता Equivalence	- आवृत्ति वितरण बहुलांक (Mode)
Ordinal क्रमिक	- समानता से बड़ा	मध्यांक (Median), शतांश (Percentile), रो (RHO)
Interval अन्तराल	- समानता से बड़ा किन्हीं दो अन्तरालों का ज्ञात अनुपात	औसतांक (Median), मानक विचलन (Standard Deviation), सह-सम्बन्ध (Co-relation)
अनुपात (Ratio)	- समानता से बड़ा किन्हीं दो अन्तरालों का ज्ञात अनुपात, - किन्हीं दो मापनी मूल्यों का ज्ञात अनुपात	ज्यामितिक औसतांक Geometric Mean, विचलन गुणांक Coefficient of variation

अनुमापन (Scaling) :- अनुमापन का सामान्य अर्थ होता है किसी वस्तु के गुण धर्मों को मापना

- विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न तत्वों के गुणो धर्मों के मापन में अनुमापन क्रिया का प्रयोग किया जाता है।
- संचार शोध के क्षेत्र में अनुमापन से तात्पर्य सामाजिक संचार घटनाओं के मापन से होता है। चूंकि सामाजिक घटनाओं को मापना आसान नहीं होता। अतः संचार शोध के क्षेत्र में अनुमापन एक जटिल क्रिया विधि है।
- संचार शोध की अनुमापन प्रविधियों में गुणात्मक तथ्यों की श्रेणियों को गणनात्मक श्रेणियों में बदलने की पद्धतियाँ है।

उदा॰ किसी विषय के सम्बन्ध में एक व्यक्ति के विचार, दृष्टिकोण, मनोवृत्ति, विश्वास, या मान्यता आदि गुणात्मक व अमूर्त चीजों को मापना कोई सरल कार्य नहीं है, फिर भी परिशुद्ध एवं सही मापन किसी भी विज्ञान की परिपक्वता (Maturity) एवं प्रगति का प्रतीक होता है। इसलिए जनसंचार के लिए भी आवश्यक होता है कि वह अपने को योग्य बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे कि अमूर्त संचार में घटित घटनाओं को ठीक-ठीक मापा जा सके।

अनुमापन प्रविधि (Scaling techniques) :- द्वारा वस्तु या घटना का मापन करते हैं तथा उसकी किसी विशेषता को गणनात्मक रूप में व्यक्त करते हैं - कपड़ा मापन

- भौतिक या प्राकृतिक चीजों की इस प्रकार की पैमाइश सरल होती है क्योंकि उन्हें मापने के लिए निश्चित पैमानों का विकास कर लिया जाता है। उदा॰ गर्मी सर्दी - क्रमसमेत्र मात्र के परिणामों - डिग्रियों

अनुमापन की उपयोगिता :- परिशुद्ध व सही माप (विज्ञान प्रगति?) → जनसंचार - काम सरल × - मनोवृत्ति, विचार, तकनीक, संचार साधन आदि अमूर्त व गुणात्मक घटनाओं को मापना पड़ता है। प्रयत्नसहीमाप संभवनहीं

वैज्ञानिक परिपक्वता

अनुमापों की प्रथम उपयोगिता यह है कि ये विज्ञान को इस योग्य बना देते हैं कि वह अपने अध्ययन विषय के अन्तर्गत आने वाली घटनाओं का सही व प्रामाणिक मापन कर सकें।

→ इसके बिना कोई भी विज्ञान परिपक्वता व प्रगति की ओर आगे नहीं बढ़ सकता

→ प्रगतिशील व विकासशील शील होना प्रत्येक विज्ञान की । अवलंबनीय आवश्यकता है और इसकी पूर्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक अनुमापन प्रविधियों में उत्तरोत्तर उन्नति न हो जाए

→ गुडे एवं हॉट के अनुसार
- सभी विज्ञान अधिकतम परिशुद्धता की दिशा में अग्रसर होते हैं
- इस परिशुद्धता के अनेक रूप होते हैं पर उसका एक आधारभूत रूप ही - क्रमबद्ध श्रेणियों का माप

वस्तुनिष्ठ मापन

Mass commu॰ घटना वास्तविक study यथार्थ व निर्भर योग्य निष्कर्ष

वस्तुनिष्ठ माप → गणनात्मक विवेचना

घटना → वस्तुनिष्ठ माप (×)

साव॰ → अलग-2 अर्थ

↓ विश्लेषण

दुर्व्याख्या (×)

* घटनी के समान, वस्तुनिष्ठ व तटस्थ निष्कर्ष निकलना तभी सम्भव है जब विभिन्न सा॰ घटनाओं को मापने की सुनिश्चित प्रणाली या पैमाना हमारे पास हो।

अनुमापन के प्रकार

- अंक पैमाना
- श्रेणी सूचक पैमाना
- तीव्रता मापक पैमाना
- सामाजिक दूरी मापक पैमाना
  - बोगार्ड्स पैमाना
  - समाज मिति पैमाना

2.4 प्रतिचयन / निदर्शन (Sampling) :- सर्वप्रथम प्रयोग वर्ष 1915 में लन्दन बादले ने किया

गुडे एवं हॉट - एक निदर्शन जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट होता है, एक विस्तृत समूह का लघुत्तर प्रतिनिधि

बोगार्डस → निदर्शन एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार, इकाइयों के समूह में से निश्चित प्रतिशत का चयन है।

Sampling - अनुसंधानकर्ता की इच्छा व आवश्यकता, विवेक पर आधारित रीति
इस रीति के अनुसार पूरे क्षेत्र में से आवश्यकतानुसार उन इकाइयों को चुन लेता है जो इसकी दृष्टि में समग्र का प्रतिनिधित्व करती है

अ.कमी- व्यक्तिगत धारणाओं और पक्षपात का भय सदैव रहता है जिससे त्रिपुल निष्कर्ष की सम्भावना बनी रहती है

सम्भावित प्रतिदर्श | असम्भावित प्रतिदर्श

→ दैव प्रतिचयन (प्रसम्भाव्यता):-
प्रतिचयन के तरीके में सर्वश्रेष्ठ रीति है
पक्षपात सम्भावना ×
चयन करना अनुसंधानकर्ता की इच्छा के बजाय अवसर पर निर्भर करता है
नमूने चुनाव के विभिन्न तरीके :-

लॉटरी रीति - सबसे अधिक प्रचलित
पर्चियां / गोलियां
सुव्यवस्थित क्रम - संख्यात्मक, कालानुक्रमिक
वर्णात्मक या भौगोलिक
दैव संख्याएं सारणी रीति :
स्तरित चयन
बहुस्तरीय दैव चयन
अभ्यंश चुनाव

③ क्रम
① साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श
Lottery method
Simple Random Number table method
② स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श
विषम / समसंख्या
③ समूह (गुच्छ) प्रतिदर्श

आवश्यकतानुसार चयन
⑤
कोटा - विशेषताओं के आधार पर श्रेणी करना
उद्देश्यपूर्ण - पूर्वज्ञान
आकस्मिक - किसी भी
क्रमबद्ध
हिमकन्दुक

प्रतिचयन विशेषताएं.
- संपूर्ण सामग्री का एक प्रतिनिधि अंश
- पक्षपात एवं मिथ्या झुकाव से स्वतंत्र
- प्रतिचयन में अध्ययन विषय अनुकूल
- प्रतिचयन का स्वरूप समग्र के अनुपात में छोटा होना चाहिए
- प्रतिचयन में परिशुद्धता अधिक मात्रा में होनी चाहिए

प्रतिचयन के लाभ
शुद्ध निष्कर्षों की प्राप्ति
सूचनाओं की प्राप्ति में सुविधा
प्रशासनिक सुविधा
खर्च की बचत
समय की बचत
अधिक गहन अध्ययन

प्रतिचयन का आधार :
पूर्ण शुद्धता आवश्यक नहीं है
एकरूपता
समग्र में से कुछ का चयन यथार्थता पर

प्रतिचयन की सीमा / दोष
- निदर्शन पालन की कठिनाई
- परिवर्तनशीलता
- निदर्शन प्रणाली की असम्भावना
- पक्षपात की सम्भावना
- विशेष ज्ञान की आवश्यकता
- प्रतिनिधि निदर्शन के चुनाव की कठिनाई

Experimental Research method प्रयोगात्मक शोध विधि :

इस विधि में अनुसंधानकर्ता सदैव नवीन तथ्यों की खोज करता है।
ज्ञान ↑

→ स्वतन्त्र चर तथा आश्रित चर के मध्य कार्य-कारण संबंधो का अध्ययन
→ यह परिकल्पना के परीक्षण की एक विधि है तथा इसके बारे में यह कहा जाता है कि यह पद्धति इस तथ्य का वर्णन तथा विश्लेषण करती है कि क्या होगा ?
→ जॉन स्टुअर्ट मिल - एकल चर के नियम (Laws of Single variable)
→ ER - study based on three type variables - ← स्वतंत्र आश्रित काल

विशेषताएँ :

- प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है, जो एकल चर नियम की अवधारणा पर आधारित है।
- इस विधि में पुनरावृत्ति की विशेषता पाई जाती है, जिससे दूसरे अनुसंधानकर्ता के निष्कर्ष की जाँच की जा सकती है।
- बाह्य चरों का नियंत्रण आवश्यक है इसके लिए विलोपन (Elimination), यादृच्छिकीकरण (Randomisation), सह प्रसरण आदि का प्रयोग
- यह विधि आगमिक है, क्योंकि इसमें व्यवहार के आगमिक तत्वों का अध्ययन होता है।
- इस विधि में पूर्वाग्रह या पक्षपात का अभाव रहता है। यह विधि वस्तुनिष्ठ होने के कारण प्राप्त आँकड़ों का गुणात्मक (Qualitative) तथा परिमाणात्मक (Quantitative) विश्लेषण आसानी से कर सकता है।

प्रयोगात्मक विधि के चरण

समस्या का चयन एवं उसका परिभाषीकरण
↓
समस्या की पहचान
↓
परिकल्पनाओं का निर्माण
↓
प्रदत्तों का संकलन
↓
प्रदत्त विश्लेषण एवं विवेचन
↓
उचित निष्कर्ष और परिणाम की प्राप्ति

2.5 Item analysis :- प्रदत्त एकत्रित करने के बाद अनुसंधान प्रक्रिया के अगले चरण में प्रदत्तों का विश्लेषण किया जाता है।

- प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए उन्हें कुछ प्रबन्धकीय समूहों या तालिका में संघटित किया जाना चाहिए।
- ऐसा प्रदत्तों का प्रासंगिक एवं उद्देश्यपूर्ण श्रेणियों में वर्गीकरण करके ही किया जा सकता है।
- सम्पादन (Editing) • प्रदत्तों के शोधन या शुद्धि की प्रक्रिया को सम्पादन कहा जाता है।
  • सम्पादन का मुख्य उद्देश्य प्रतिवादी द्वारा प्रदान किए गए गलत अनुमान, गलत वर्गीकरण और त्रुटियों की पहचान करना एवं उनको कम करना होता है।
  • सम्पादन के माध्यम से कूट लेखन के लिए प्रदत्तों की गुणवत्ता में सुधार किया जाता है।
- इटलैखन (Coding) :- यह अनुसंधान में किसी चर के माप पर निर्भर करता है
  - इसके लिए सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि प्रदत्त गुणात्मक है या परिमाणात्मक
- " सारणीकरण के बाद, विभिन्न गणितीय और सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से प्रदत्तों का ~~विश्लेषण~~ विश्लेषण किया जाता है। जैसे - प्रतिशत, औसत, सहसम्बन्ध प्रतिगमन इत्यादि।
- यह गुणात्मक और परिमाणात्मक प्रदत्तों पर निर्भर करता है। जो निम्न है

Qualitative Data analysis :-
गुणात्मक प्रदत्त विश्लेषण

- विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण कई बार व्यक्तिगत हो सकता है और इसमें मुख्य रूप से कुछ नियम एवं प्रक्रियाएं हो सकती हैं।
- इसमें शोधकर्ता सामग्री विश्लेषण की प्रक्रिया को अपनाता है।
- सामग्री विश्लेषण का अर्थ है कि मुख्य विषय की पहचान करने के लिए साक्षात्कार की सामग्री का विश्लेषण करना
- इस प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण शामिल हैं
  - मुख्य विषयों को स्पष्ट करना
  - मुख्य विषयों के लिए कूट निरूपित करना
  - मुख्य विषयों के अन्तर्गत प्रतिक्रियाओं को वर्गीकृत करना
  - रिपोर्ट के मूल पाठ में विषयों और प्रतिक्रियाओं को एकीकृत करना

परिमाणात्मक डाटा विश्लेषण
Quantitative Data analysis

- यह विधि अच्छी तरह से अभिकल्पित और प्रशासित सर्वेक्षण के लिए शाब्दिक प्रश्नावली का उपयोग करने के लिए सबसे उपयुक्त है।
- इसमें प्रदत्तों का विश्लेषण मैन्युअली या कम्प्यूटर की सहायता से किया जा सकता है।

सर्वेक्षण Survey = सुर + वेयर
ऊपर से देखना

→ सर्वेक्षण एक प्रकार का सम्पर्क अवलोकन है
→ सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसे अध्ययनों से है, जिसमें अनुसंधानकर्ता को किसी विशेष स्थान पर जाकर कुछ अवस्थाओं या परिस्थितियों से संबंधित सही सूचनाओं का संकलन करना होता है।
→ अनुसंधानकर्ता घटना का वैज्ञानिक निरीक्षण करता है। तथा उसके सम्बन्ध में खोज करता है
→ जनसंचार की समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण उपकरण सर्वाधिक व्यापक रूप में प्रयुक्त किए जाने वाले उपागमों में से एक

परिभाषा वेबस्टर- "वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया आलोचनात्मक निरीक्षण ही सामाजिक सर्वेक्षण है।"

सर्वेक्षण के प्रमुख सोपान :

- उद्देश्य का निर्धारण - सर्वेक्षण पूर्व निर्धारित उद्देश्य को ध्यान में रखकर
- उपकरण एवं प्रविधि का चयन
- उपकरणों का परीक्षण - विश्वसनीयता, वैधता, उपादेयता - जानने के लिए
- प्रतिदर्श का चयन - प्रतिदर्श का आकार, तरीका, सर्वेक्षण के उद्देश्य, सर्वेक्षण में प्रयुक्त विधि
- प्रतिदर्श कार्य का निर्धारण

सर्वेक्षण की विशेषताएं :

- सर्वेक्षण एकमात्र ऐसा साधन है, जो वर्तमान समय में विद्यमान तथ्यों का अध्ययन, वर्णन एवं व्याख्या करता है।
- अनुकर्ता द्वारा अपने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण उपकरण प्रयुक्त करना सभी दृष्टिकोणों से उपयुक्त होता है।
- सर्वेक्षण वर्तमान समय में विद्यमान तथ्यों के अध्ययन का उत्तम साधन है।

विशेषताएं :-

- संचार समस्याओं में सर्वेक्षण, सर्वाधिक व्यापक रूप में तथ्यों को प्रस्तुत करने वाला उपागम है।
- आदर्शमूलक रूप में यह सामान्यतया विशिष्ट व्यवहारों या स्थितियों के निर्धारण को स्पष्ट करता है।
- आदर्श सर्वेक्षण - अनुसंधान जिसका उद्देश्य वर्तमान समय में सामान्य अथवा विशिष्ट व्यवहारों या स्थिति को ज्ञात करना होता है।
- इस अनुसंधान का संबंध व्यक्तिगत विशेषताओं से न होकर पूर्ण जनसंख्या या उसके न्यायदर्श की सामान्यीकृत सांख्यिकी से होता है।
- इस अनुसंधान में स्पष्ट परिभाषित समस्या तथा सुनिश्चित उद्देश्य सम्मिलित होते हैं इसमें कथन प्रधान आयोजनों को सावधानीपूर्वक विश्लेषण व्याख्या तथा निष्कर्ष का तर्कयुक्त निपुणतापूर्ण निवेदन शामिल है।
- स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी जानकारी प्रदान की जाती है।
- यह गुणात्मक या संख्यात्मक दोनों प्रकार का
- अनुसंधान की पूर्व योजना अथवा अनुसंधान के विस्तृत क्षेत्र के सोपानों में यह उपयुक्त रूप से अनुकूल प्रतीत होती है।

सर्वेक्षण का महत्व :

- यह वर्तमान प्रकृति का पता लगाती है, जिससे समस्याओं के अनुसंधान में सहायता मिलती है।
- सर्वेक्षण द्वारा भावी विकास का संकेत प्राप्त होता है।
- सर्वेक्षण द्वारा अनुसंधान उपकरण के निर्माण में सहायता मिलती है।
- यह पृष्ठभूमि के विचार एवं तथ्य प्रस्तुत करने में सहायक
- यह मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों प्रकार के तथ्यों एवं आंकड़ों का संकलन करके समस्या के समाधान में सहायक
- सर्वेक्षण में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाता है और उसी के द्वारा संकलित तथ्यों का विश्लेषण वर्गीकरण, मूल्यांकन तथा सामान्यीकरण

2.4 प्रयोगात्मक शोध विधि Experimental Research method :

→ नवीन तथ्यों की खोज करता रहता है तथा यह शोधकर्ताओं के ज्ञान को बढ़ाने में सहायक होता है।
→ स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर के मध्य कार्य-कारण सम्बन्धों का अध्ययन करता है।
→ परिकल्पना के परीक्षण की एक विधि है।
→ यह पद्धति इस तथ्य का वर्णन करती है कि क्या होगा ?

Cond 1 +/− Cond 2 ↔

Concept → जेम्स एस मिल :- एकल चर के नियम (Law of Single variable)

प्रयोगात्मक अनुसंधान में नि. लि. तीन चरों के आधार पर व्याख्या की जा सकती है

① स्वतंत्र चर (Independent variable) / प्रायोगिक चर - जिस चर में प्रयोगकर्ता परिवर्तन करता है, उसे स्वतंत्र चर कहते हैं
- किसी चर के प्रभाव को जानने के लिए

संचालित चर +/− ↓ → जैविक चर +/− (जोड़ तोड़) नहीं होता

② आश्रित चर (Dependent variable / प्रभाव चर) → पढ़ाने की विधि के प्रभाव का अध्ययन शैक्षिक उपलब्धि पर करना

③ बाह्य चर (Extraneous variable) :- ऐसा चर जिनका अध्ययन प्रयोगकर्ता अपने परीक्षण में नहीं करता है वह "बाह्य चर" कहलाता है।
- यह आश्रित चर को भी प्रभावित करता है

और
~~स्वतंत्र~~ नियंत्रण — आश्रित

प्रयोगात्मक शोध विधि की विशेषताएं :-

→ वैज्ञानिक विधि जो एकल चर नियम पर आधारित
→ पुनरावृत्ति (+) जिससे दूसरे अनुसंधानकर्ता के निष्कर्ष की जाँच की जा सकती है।
→ बाह्य चरों का नियंत्रण आवश्यक होता है
विलोपन (Elimination), यादृच्छिकीकरण (Randomisation) सह-प्रसरण आदि का उपयोग
→ यह विधि आणविक है - व्यवहार के आणविक तत्वों का अध्ययन
→ इस विधि में पूर्वाग्रह या पक्षपात का अभाव
- यह विधि वस्तुनिष्ठ होने के कारण प्राप्त आँकड़ों का गुणात्मक (Qualitative) तथा परिमाणात्मक (Quantitative) विश्लेषण आसानी से कर सकता है

प्रयोगात्मक शोध विधि के चरण

समस्या का चयन एवं उसका परिभाषीकरण
↓
समस्या की पहचान
↓
परिकल्पनाओं का निर्माण
↓
प्रदत्तों का संकलन
↓
प्रदत्त विश्लेषण एवं विवेचन
↓
उचित निष्कर्ष और परिणाम की प्राप्ति

वैधता परीक्षण Validity :

किसी भी परीक्षण की वैधता उसकी वह मात्रा होती है, जो एक सीमा तक वस्तु का मापन करती है। यह वह सीमा होती है, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया होता है।

- परीक्षण वैधता का परीक्षण से घनिष्ठ सम्बन्ध
- शोध में वैधता किसी परीक्षण की विशेषता न होकर परीक्षण से प्राप्त निष्कर्षों व निर्णयों की विशेषता होती है।
- कोई भी परीक्षण अपने आप में वैध परीक्षण या अवैध परीक्षण नहीं होता, बल्कि परीक्षण का प्रयोग उसको वैध या अवैध परीक्षण बनाता है।

→ किसी भी परीक्षण को पूर्णतया वैध अथवा अवैध करना भी उचित नहीं होता है। वैधता का कोई प्रकार नहीं होता, अपितु वैधता एक इकाई प्रत्यय (unitary concept) है, जो कि पूर्णतः प्रमाण पर निर्भर करता है।

→ वैधता प्रमाण (validity evidence) तीन व्यापक स्रोतों पर आधारित होता है- विषय वस्तु, दूसरे चरों से सम्बन्धता और अन्वय (निर्मित) संरचना अवधा

गैरेट → किसी परीक्षण या मापन उपकरण की वैधता इस बात पर निर्भर करती है, कि वह कितनी शुद्धता से उस गुण का मापन करता है, जिसके लिए उसे बनाया गया है।

इस प्रकार कोई भी परीक्षण स्वीकृत मानक के अनुरूप जितना मापन करता है, वही उसकी वैधता की मात्रा होती है।

वैधता परीक्षण के प्रकार :-

- रूप वैधता
- विषयगत वैधता
- तर्कसंगत वैधता
- कारक वैधता
- पूर्व कथन वैधता
- समवर्ती वैधता
- अन्वय वैधता

वैधता को प्रभावित करने वाले कारक :-

- प्रश्नों की भाषा एवं शब्दावली
- प्रश्नों का कठिनाई स्तर
- प्रश्नों की वस्तुनिष्ठता
- प्रकरणों का अवांछित भार
- मापन का उद्देश्य
- अस्पष्ट निर्देश
- अभिव्यक्ति का माध्यम
- परीक्षण की लंबाई $r_{cn} = \frac{n r_{c1}}{\sqrt{n + n(n-1) r}}$

  r_{c1} = सह-सम्बंध के रूप में मूल परीक्षण का वैधता गुणांक

  r_{cn} = सह-सम्बन्ध के रूप में संशोधित (n गुने) परीक्षण का वैधता

  r = मूल परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक

- सांस्कृतिक प्रभाव
- प्रतिक्रिया प्रणाली
- वैधता के मूल्य पर अधिक विश्वसनीयता

वैधता स्थापित करने की विधियाँ.

→ तार्किक विधियाँ/आंतरिक कसौटी पर आधारित वैधता

→ सांख्यिकीय विधियों या बाह्य कसौटी पर आधारित ~~विधियाँ~~ वैधता।

वैधता प्रमाण के स्रोत

- आंतरिक संरचना पर आधारित
- विषय-वस्तु निष्कर्ष
- दूसरे चरों के सम्बन्धों पर आधारित प्रमाण/ कसौटी-सन्दर्भित सम्बन्धित वैधता criterion related validity
  - पूर्वकथन Predictive
  - एकीभूत वैधता Concurrent validity

विश्वसनीयता परीक्षण :- Reliability

{ किसी परीक्षण को एक व्यक्ति / एक समूह पर बार-बार प्रशासित किया जाए एवं प्राप्तांकों में निश्चितता पाई जाए तो ऐसे परीक्षण को विश्वसनीय परीक्षण क.. }

- परीक्षण जिस पर विश्वास किया जा सके।
- R का संबंध प्राप्तांकों में स्थायित्व से होता है।
- प्रमुख तकनीकी कसौटी
- किसी परीक्षण को वैध होने के साथ विश्वसनीय होना भी आवश्यक होता है।

फ्रीमैन :- किसी परीक्षण की विश्वसनीयता इस बात को इंगित करती है, कि उस परीक्षण में आंतरिक संगति कितनी है और उस परीक्षण के बार-बार प्रयोग से प्राप्त परिणामों में कितनी संगति है।

विश्वसनीयता का सम्बन्ध → परीक्षण में प्राप्त अंकों (Scores) की संगति consistency
महत्व होता है → मापन की परिवर्तित त्रुटि (Variable Error)

इसमें विश्वसनीयता गुणांक को स्थायित्व गुणांक और समतुल्यता गुणांक भी कहते हैं।

विश्वसनीयता ज्ञात करने की विधियाँ :-

- परीक्षण पुनः परीक्षण विधि
- समतुल्य परीक्षण विश्वसनीयता
- अर्द्ध-विच्छेद विश्वसनीयता
  स्पीयरमैन-ब्राउन सूत्र $r = \frac{2r^2}{1+r^2}$
  r = विश्वसनीयता गुणांक
  r' = परीक्षण के अर्द्ध खण्ड का विश्वसनीयता गुणांक (दो अर्द्धखण्डों के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक
  - सम विषम अर्द्ध विच्छेद विधि
  - प्रथम-द्वितीय अर्द्धांश विधि
- तार्किक समतुल्यता विश्वसनीयता / कुडर रिचर्डसन विधि / आंतरिक संगति गुणांक
  दोसूत्र K-R 20 ✓
  K-R 21
- होयट विश्वसनीयता

विश्वसनीयता को प्रभावित करने वाले कारक

- परीक्षण की लंबाई $r_n = \frac{n r_1}{1-(n-1) r_1}$
  r_n = परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक
  r_1 = मौलिक परीक्षण की विश्वसनीयता
  n = परीक्षण की लंबाई बढ़ाने का गुणांक
- परीक्षण की सजातीयता
- विभेदन क्षमता
- कठिनाई स्तर
- योग्यता प्रसार
- आयु प्रसार
- वस्तुनिष्ठता
- प्रशासन की परिस्थितियां एवं फलांकन की विधि
- विश्वसनीयता ज्ञात करने की विधि

⇒ परीक्षण की विश्वसनीयता को बढ़ाने के उपाय :-

- प्रश्नों की संख्या अधिक की जानी चाहिए
- प्रश्नों को अधिक सजातीय बनाया जाना चाहिए
- परीक्षण में अधिक विभेदक क्षमता वाले प्रश्न शामिल किए जाने चाहिए
- परीक्षण में औसत कठिनाई स्तर वाले प्रश्न शामिल किए जाने चाहिए
- परीक्षण में वस्तुनिष्ठ प्रश्न रखने चाहिए
- छात्रों के समूह का योग्यता प्रसार किया जाना चाहिए।

ऑब्ट्रूसिव और नॉन-ऑब्ट्रूसिव विधियाँ :- संचार शोध कार्य में डाटा संग्रहण के लिए विभिन्न प्रकार की प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

- इसमें ऑब्ट्रूसिव तथा नॉन-ऑब्ट्रूसिव प्रविधियाँ, संचार शोध डाटा संग्रहण की दो प्रमुख प्रविधियाँ है।

→ ऑब्ट्रूसिव विधि

- ऑब्ट्रूसिव विधि में डाटा संग्रहण प्रक्रिया के दौरान सम्बन्धित विषय (concern object) को इस तथ्य से अवगत कराया जाता है कि उसका अध्ययन किया जा रहा है।
- अत: सम्बन्धित विषय की प्रतिक्रिया और उनके व्यवहार का विश्लेषण करके वाँछनीय आँकड़ों की प्राप्ति की जाती है।
- इसके लिए साक्षात्कार और प्रश्नावली प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :- यदि किसी शरणार्थी शिविर में उपस्थित व्यक्तियों से सम्बन्धित विभिन्न आँकड़ों का संग्रह करना हो तथा उस शिविर के सभी व्यक्ति इस तथ्य से अवगत हों कि उन पर शोध कार्य हेतु कुछ आँकड़ों की आवश्यकता है और साक्षात्कार तथा प्रश्नावली प्रक्रिया के द्वारा उस शिविर से सम्बन्धित व्यक्तियों के बारे में कुछ आँकड़ों को एकत्र किया जाए, तो यह प्रविधि ऑब्ट्रूसिव प्रविधि कहलाएगी!

★★★ नॉन-ऑब्ट्रूसिव विधि :-

- जब शोधकर्ता द्वारा आँकड़ों का संग्रहण इस प्रकार किया जाता है कि सम्बन्धित विषय को इस तथ्य की जानकारी नहीं होती है कि उस पर शोध कार्य किया जा रहा है
- उदा. यदि शरणार्थी शिविर के व्यक्तियों के सन्दर्भ में आँकड़ों का संग्रहण इस प्रकार किया जाता है कि उन व्यक्तियों को इस तथ्य का संज्ञान न हो, तो इसे नॉन ऑब्ट्रूसिव विधि कहा जाएगा !

⇒ नॉन-ऑब्ट्रूसिव विधि के अन्तर्गत तीन प्रक्रियाओं - अप्रत्यक्ष गणना (Indirect measure), सामग्री विश्लेषण (content analysis) और द्वितीय डाटा विश्लेषण Secondary analysis of Data का प्रयोग किया जाता है।

कराल्गिर के अनुसार :- द्वितीयक स्रोत किसी ऐतिहासिक घटना या स्थिति का वह अभिलेख या रिकॉर्ड है, जो मूल भण्डार से एक या दो कदम दूर होते हैं।

★★ द्वितीय स्रोत डाटा :

इन स्रोतों में वे डाटा शामिल होते हैं, जिन्हें किसी अन्य उद्देश्य के लिए एकत्रित और संकलित किया जाता है।

- द्वितीय स्रोतों में आसानी से उपलब्ध सारांश और पहले से ही सांख्यिकीय वक्तव्यों और रिपोर्ट को डाटा के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसे शोधकर्ताओं द्वारा अनेक अध्ययनों में प्रयोग किया जाता है।

उदा. जनगणना रिपोर्ट, वार्षिक रिपोर्ट, वित्तीय कम्पनियों की रिपोर्ट, सहकारिता से सम्बन्धित रिपोर्ट, नेशनल बैंक द्वारा प्रकाशित फाइनेंस रिपोर्ट राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन की रिपोर्ट ट्रेड संगठनों की रिपोर्ट का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय संगठन - UNO, IMF, WB प्रकाशन ILO, WHO

ट्रेड एवं फाइनेंस जर्नल, समाचार पत्र आदि की शोध के लिए किया जा सकता है।

→ द्वितीयक स्रोतों में न केवल प्रकाशित रिकॉर्ड और रिपोर्ट, बल्कि उसके अप्रकाशित रिकॉर्ड भी शामिल होता है

→ बाद के वर्गों में फर्म और संगठनों द्वारा व्यवस्थित किए गए विभिन्न अन्य रजिस्टर भी शामिल होते हैं;

जैसे लेखांकन और वित्तीय अभिलेख
व्यक्तिगत रिकॉर्ड
सदस्यों के रजिस्टर सम्मेलन
घटना रिकॉर्ड आदि !

⇒ किसी ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी मूल स्रोत से न कर किसी अन्य स्रोत से प्राप्त करना द्वितीयक स्रोत में शामिल है।

→ यह प्राथमिक स्रोत की तुलना में कम विश्वसनीय होता है

→ किसी का जीवन इतिहास, व्यक्तिगत विवरण, संस्मरण इत्यादि द्वितीयक स्रोत के उदाहरण है

→

Interview : **साक्षात्कार** : साक्षात्कार अंग्रेजी भाषा के "इण्टरव्यू" शब्द का हिंदी रूपांतरण है। – वह विधि, जिसके द्वारा व्यक्ति के भीतर झांका जा सके।

Inter view
भीतर झाँकना/देखना = भीतर देखना

"साक्षात्कार का अर्थ एक ऐसी विधि से होता है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति की आंतरिक स्थिति के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सके।

- शोध सामग्री के संग्रहण का एक माध्यम है - आमने-सामने बैठकर - बातचीत, चर्चा, सेवार्ता Contact
- प्रेक्षण विधि में शोधकर्ता केवल उनके व्यवहारों आदि का अवलोकन करता है। जानकारी प्राप्ति करने हेतु उनसे कोई प्रश्न आदि नहीं पूछता
- साक्षात्कार का माध्यम, भाषा अर्थात बातचीत होती है। उसमें किसी प्रश्नावली अथवा मनोवैज्ञानिक परीक्षा का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- >1 साक्षात्कारकर्ता, परन्तु अनुसंधान में 1 ही साक्षात्कारकर्ता
- व्यवहार विज्ञान में साक्षात्कार का प्रयोग चयन, उपचार, निदान हेतु भी किया जाता है।
- मानव विकास के आरम्भिक वर्षों में साक्षात्कार का प्रयोग मनुष्य के स्वभाव तथा उसके व्यक्तित्व के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु किया जाता है

डेंजिन > साक्षात्कार आमने-सामने किया गया एक संवादयुक्त आदान-प्रदान है, जहाँ एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कुछ सूचनाएं प्राप्त करता है"

साक्षात्कार का स्वरूप

- साक्षात्कार के प्रारूप में काफी लचीलापन होता है।
- साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता द्वारा, न कि प्रत्यर्थी द्वारा, सूचनाओं को रिकॉर्ड किया जाता है
- साक्षात्कार एक आमने-सामने की परिस्थिति होती है।
- साक्षात्कार में प्रश्न पूछे जाते हैं तथा उनके उत्तर शाब्दिक रूप में दिए जाते हैं
- साक्षात्कारकर्ता तथा साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के बीच का सम्बन्ध विशिष्ट ढंग से संरचित होता है।

सफल साक्षात्कार के महत्वपूर्ण बिन्दु (संचालन, समापन) > कला है

- उत्तरदाता को उत्तर देने में मौखिक स्वतंत्रता
- उत्तरदाता से सफल मैत्रिक भावना की स्थापना
- प्रक्षेपी आधार पर प्रश्नों को पूछना
- समय-2 पर वार्तालाप के बीच में मनोरंजन की भी बातें करते रहना
- प्राप्त उत्तरों को सावधानीपूर्वक तथा सहानुभूतिपूर्वक सुनना
- साक्षात्कार का सफल व सन्तोषजनक समापन
- उत्तरों का व्यापक तथा परिशुद्ध अभिलेखन करना
- उत्तरदाता से अत्यधिक घनिष्ठता से बचना
- रूढ़िबद्ध प्रश्नों तथा उत्तर-निर्देशक प्रश्नों का यथासम्भव बहिष्कार करना
- अप्रत्यक्ष प्रश्नों की रचना
- वस्तुपरक तथा व्यापक साक्षात्कार-अनुसूची की रचना, निर्धारण मापनियों का उपयोग
- संवेदनशील प्रश्नों को समयानुसार ही पूछना
- उत्तरदाता को विस्तृत, व्यक्तिगत व सूक्ष्म उत्तरों को देने के लिए प्रेरित करते रहना।
- प्रेरणात्मक अन्तर्क्रिया
- उत्तरों के अभिलेखन में यथासम्भव यांत्रिक साधनों का उपयोग।

साक्षात्कार की प्रक्रिया

अन्तर्क्रिया - साक्षात्कारकर्ता ↔ प्रत्यर्थी
निश्चित उद्देश्य

1. साक्षात्कार हेतु तैयार - Infⁿ Unit, Queⁿ पूर्व Personality अध्ययन, बुनियादी, मान्यता, Ex study
2. प्रतिष्ठा स्थापित करना
3. सूचनाओं का अभिलेखन - ज्यों के त्यों - By Record, अभिलेख

साक्षात्कार के प्रकार

1. नैदानिक साक्षात्कार (Clinical Interview) / गहन
2. निदानात्मक साक्षात्कार (Diagnostic Interview)
3. चयन साक्षात्कार (Selection Interview)
4. शोध साक्षात्कार (Research Interview)
5. संरचित सा. (Structured Interview) औपचारिक / प्रतिबंधित साक्षात्कार
6. असंरचित सा. (Unstructured Interview)
7. केन्द्रित साक्षात्कार (Central Interview)

साक्षात्कार का महत्व

- गोपनीय सूचनाएं देना
- व्यक्तिगत सम्पर्क में सहायक
- शोध के स्पष्टीकरण का सहायक
- व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक गुणों की जानकारी
- लचीलापन
- व्यक्ति को अवसर
- प्रेक्षण का अवसर
- प्रश्न पूछने की स्वतन्त्रता
- अन्य विधियों से प्राप्त तथ्यों का सत्यापन

केस स्टडी! - केस अध्ययन का सम्बन्ध किसी व्यक्ति, समूह, संगठन, संस्था या घटना के गहन अध्ययन करने से है।
- इस विधि में किसी एक या अनेक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है

पीवी यंग - केस अध्ययन किसी सामाजिक इकाई की संभालना या उसका विश्लेषण करना है
→ यह इकाई एक व्यक्ति हो सकता है, एक संस्थान, एक सांस्कृतिक समूह यहाँ तक कि एक पूरा परिवार हो सकता है।

उद्देश्य, इकाई विशेष के जटिल व्यवहार और तौर तरीकों को समझना, उसके कारणों और प्रभावों के बीच अन्तर्सम्बन्धों को खोजना है।
- यह गुणात्मक विधि है (Qualitative)
- केस अध्ययन विधि में सामान्यतः व्यक्तिगत साक्षात्कारों, सामान्य साक्षात्कारों अथवा दस्तावेजों (व्यक्तिगत, अधिकारिक, पत्र व्यवहार आदि) के आधार पर आँकड़े जुटाए जाते हैं।

अन्य विधि - सामान्य पहलू
केस study - इकाई के भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक पहलू पर भी
- इसमें संख्या के स्थान पर विश्लेषण पर बल दिया जाता है

केस अध्ययन आविष्कार के घटक :-
C.S. Generally - single person या small group
- कभी-कभार घटने वाली किसी एक घटना पर आधारित होता है
- किसी घटना का आपके भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसको जानने के लिए गुणात्मक शोध की आवश्यकता होती है
- निरंतरता
- प्रदत्तों की पूर्णता
- प्रदत्तों की वैधता
- आलेख की गोपनीयता
- वैज्ञानिक विश्लेषण

केस अध्ययन की विशेषताएं
- इसमें सूचनाएं समग्रता में जुटाई जाती हैं, इसलिए समस्या समाधान में आसानी होती है
- इसमें वास्तविक जिन्दगी, स्थितियों के किसी एक पहलू, विशेष स्थितियों का अध्ययन
- केस अध्ययन विषय का विस्तृत विवरण प्रस्तुत
- इसमें प्राक्कल्पना निर्धारित करने में बहुत मदद मिलती है
- कोई समस्या कैसे पैदा हुई या कोई घटना कैसे घटी यह जानने के लिए केस अध्ययन विधि का प्रयोग किया जाता है
- इस विधि से अध्ययन करने से शोधकर्ता के निजी अनुभव का विस्तार होता है।
- इस विधि से प्राप्त आँकड़ों का संक्षिप्तीकरण, वर्गीकरण और सामान्यीकरण आसान नहीं होता है
- इस विधि में पूर्वाग्रह (Bias) होने की संभावना कम
- लंबी अवधि तक एक विषय का गहन अध्ययन
- केस अध्ययन एक ऐसा उपागम है, जो सामाजिक इकाई (social unit) को एक सम्पूर्णता के दृष्टिकोण से देखता है
- यह आवश्यक नहीं कि यह सामाजिक इकाई कोई एक व्यक्ति हो, बल्कि यह परिवार, सामाजिक समूह, समुदाय या सामाजिक संस्थान कुछ भी हो सकता है

32

प्रश्नावली :

- प्रश्नावली प्रश्नों अथवा कथनों की एक ऐसी लिखित सूची होती है, जिसके प्रश्नों के उत्तर, उत्तरदाता स्वयं लिखता है।
- इन प्रश्नों को एक पुस्तिका अथवा प्रपत्र के रूप में छपवाया जाता है।
- ये प्रपत्र या तो डाक द्वारा उत्तरदाताओं को भेजे जाते हैं, जिनके उत्तर लिखकर वे शोधकर्ता को वापस लौटा देते हैं अथवा शोधकर्ता उत्तरदाताओं को अपने सामने बैठाकर उन्हें ये पुस्तिकाएं बाँट देता है तथा उत्तरदाता प्रश्नों को पढ़कर स्वयं उनके उत्तर लिख देते है।

गुडे व हॅट : "प्रश्नावली से तात्पर्य एक ऐसे साधन से है, जिसमें एक फॉर्म के सहारे प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं तथा जिसे प्रत्यर्थी स्वयं भरते हैं।"

→ प्रश्नावली किसी तथ्य से सम्बन्धित कई प्रश्नों का एक समूह होती है। दूसरे शब्दों में, जब किसी शोध समस्या के चर को मापने के लिए उस चर से सम्बन्धित कई प्रश्न एक साथ तैयार कर लिए जाते हैं, तो इन प्रश्नों को प्रश्नावली कहा जाता है।

→ प्रश्नावली एक फॉर्म के रूप में तैयार की जाती है जिसमें प्रश्न, उसके उत्तर एवं उसके उत्तर के लिए जगह, प्रत्यर्थी का नाम, पता, योग्यता आदि लिखने के लिए भी पर्याप्त स्थान होता है।

→ प्रश्नावली की एक विशेषता यह होती है कि इसे प्रत्यर्थी स्वयं पढ़ता है तथा पुस्तिका में छपे प्रश्नों का उत्तर भी स्वयं देता है। यह उत्तर उसे अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर देना होता है। चूंकि, प्रश्नावली में प्रत्यर्थी अपने बारे में स्वयं वर्णन करता है, इसलिए इसे कुछ विद्वानों ने आत्म रिपोर्ट प्रविधि भी कहना पसंद किया है।

प्रश्नावली के उद्देश्य :

- अध्ययन की सुविधा तथा सरलता
- कम खर्च तथा कम श्रम
- दूरस्थ क्षेत्रों तथा विस्तृत क्षेत्रों का अध्ययन
- द्रुतगामी अध्ययन
- व्यवस्थित तथा वस्तुपरक अध्ययन

प्रश्नावली की विशेषताएं :-

एक अनुसंधान कार्य में तथ्य तथा सूचनाएं संकलित करने के लिए सबसे अधिक उपयोग में आने वाला उपकरण प्रश्नावली है।

- प्रश्नावली में दिए गए प्रश्नों के महत्व को समझ सकें तथा उसका सही उत्तर दे सकें।
- प्रश्नों की भाषा सरल हो तथा प्रश्न नुकीले होने चाहिए अर्थात् प्रश्न से सभी लोग एक ही अर्थ निकालें।
- द्विअर्थक शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
- यथासम्भव प्रश्नावली की लम्बाई कम होनी चाहिए, क्योंकि अधिक लम्बी प्रश्नावली से प्रत्यर्थी में मानसिक नीरसता उत्पन्न होती है और वह प्रश्नों का उत्तर भिन्न-भिन्न मन से दे पाता है।
- प्रश्नावली की लम्बाई से तात्पर्य प्रश्नावली में रखे गए प्रश्नों की संख्या से है।

प्रश्नावली के प्रकार :-

व्यवहारपरक विज्ञानों में प्रयुक्त होने वाली प्रश्नावली को दो कसौटियों पर विभिन्न भागों में बाँटा गया है।

- प्रश्नावली में व्यवहृत एकांशों के आधार पर
  - निश्चित या सीमित एकांश वाली प्रश्नावली
    - उत्तर सीमाबद्ध / नियंत्रित
    - प्रश्नों के कुछ निश्चित उत्तर
    - विकल्प
    - लिखना नहीं पड़ता - चिह्न ✓
    - अज्ञ व्यक्ति की तरह जो अपने विचार को शाब्दिक रूप से व्यक्त करने में असमर्थ
  - विस्तृत एकांश वाली प्रश्नावली
    - लिखित उत्तर
    - व्यक्ति की मनोवृत्ति
    - मत
    - ज्ञान
    - सम्पूर्ण अभिव्यक्ति
    - गहराई में जानना है
- क्रियान्वयन के तरीकों के आधार पर
  - आमने-सामने क्रियान्वित प्रश्नावली
    - शोधकर्ता
    - Proxent
    - मौखिक निर्देश
    - गलतफहमी / जिज्ञासाएं
    - सौहार्दपूर्ण सम्बंध
  - डाक प्रश्नावली

- प्रश्नों में प्रयुक्त होने वाले शब्द तथा वाक्य यथासम्भव सरल हों, ताकि उससे प्रत्यर्थी के मन में किसी प्रकार की सम्भ्रान्ति उत्पन्न न हो। प्रत्येक प्रश्न में एक ही स्पष्ट विचार सम्मिलित होना चाहिए
- एक प्रश्न में एक विचार निहित होना चाहिए
- ~~एक~~ प्रश्न वस्तुनिष्ठ होने चाहिए
- प्रश्नावली का निर्देश पूर्ण एवं स्पष्ट होना चाहिए
- प्रश्न क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित होने चाहिए
- प्रश्नों का क्रम मनोवैज्ञानिक तथा प्रभावकारी होना चाहिए। सामान्यतः प्रश्नावली में सामान्य प्रश्नों को पहले तथा विशिष्ट प्रश्नों को बाद में उपस्थित करना चाहिए या अनुकूल प्रश्नों को पहले तथा प्रतिकूल प्रश्नों को बाद में रखना चाहिए
- प्रश्न उत्तरदाता की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाले नहीं होने चाहिए।

प्रश्नावली का निर्माण :-

अध्ययन की समस्या
प्रश्नों का लिखना
प्रश्नावली का बाह्य रूप
आकार
कागज
छपाई
प्रश्नों की व्यवस्था
प्रश्नों का निर्माण
प्रश्नावली की जाँच

प्रश्नावली की सीमाएँ

- केवल उच्च स्तर के शिक्षित व्यक्तियों का अध्ययन
- सार्वभौमिक प्रश्नों की रचना में कठिनाई
- गहन तथा सतत अध्ययन के लिए अनुपयुक्त
- विभिन्न व्याकरणिक कठिनाइयाँ
- पक्षपात पूर्ण प्रतिचयन
- अधिकांश उत्तरों का अपर्याप्त रूप में उपलब्ध होना

✓ (Schedules) अनुसूचियाँ ; इस विधि में जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रगणक (Enumerators) की नियुक्ति की जाती है एवं अनुसूचियों में प्रासंगिक प्रश्नों को सम्मिलित किया जाता है।

Observation अवलोकन.

इसमें साक्षात्कार (Interview) लिए बिना जाँचकर्ता के स्वयं के अवलोकन के माध्यम से जानकारी एकत्र की जाती है और प्राप्त की गई जानकारी वर्तमान घटनाओं से ही सम्बन्धित होती है।

→ यह विधि काफी महँगी होती है और इस विधि द्वारा सीमित जानकारी ही एकत्रित की जाती है।

→ यह विधि बड़े न्यादर्श के लिए उपयुक्त नहीं है।

⇒ Case Study

→ Interview

Qualitative Research :- गुणात्मक शोध विधि

- इस अनुसंधान का उद्देश्य मानव व्यवहार तथा उसे नियंत्रित करने वाले कारणों को समझना होता है।
- इस विधि के अन्तर्गत क्या, कहाँ, कब, क्यों और कैसे आदि प्रश्नों की जाँच की जाती है।
- इस विधि में Hypothesis (परिकल्पना) , यह विकल्प खुला रखते हैं
- यह विधि मात्रात्मक के स्थान पर व्यक्तिगत अनुभवों के विश्लेषण पर बल देता है

- गुणात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत कुछ विशिष्ट विधियों का प्रयोग किया जाता है, जैसे कि वे
- समूह केन्द्रित अनुसंधान (Focus Group research).
- प्रत्यक्ष अवलोकन (Direct observation) : वहा पर्यवेक्षक के द्वारा
- गहन साक्षात्कार (Indepth interviews)
- कथात्मक अनुसंधान (Narrative Research) - मुख्य साहित्य की मीमांसा
- घटनाजन्य अनुसंधान (Phenomenological Research) - अनुसंधानकर्ता व्यक्तियों से किसी घटना के विषय में उनके अनुभवों को समझने का प्रयास करता है
- जातिवृत्त अनुसंधान (Ethnography) :- जातिवृत्तात्मक का मूल मानवशास्त्र में है। इस अनुसंधान का उद्देश्य भौतिक और सामाजिक पर्यावरण का निर्धारण करना है।
- व्यक्तिगत अध्ययन अनुसंधान (Case study Research)- यह मनोवैज्ञानिक विकार सामाजिक शास्त्र, व्यापार क्षेत्र आदि से प्रदत्तों को एकत्रित करने की विधि है। यह एक व्यक्ति, परिवार, समूह या समुदाय हो सकता है इसका मुख्य उद्देश्य - इकाई के जीवन स्तर को समझना
- प्रदत्त आधारित सिद्धांत (Grounded theory) इसके अन्तर्गत शोधकर्ता द्वारा एकत्रित किए प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी सिद्धांत को विकसित किया जाता है.

Qualitative Data Analysis : विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण कई बार व्यक्तिगत हो सकता है और इसके मुख्य रूप से कुछ नियम एवं प्रक्रियाएँ हो सकती हैं

इसमें शोधकर्ता सामग्री विश्लेषण की प्रक्रिया को अपनाता है। सामग्री विश्लेषण का अर्थ है कि मुख्य विषय की पहचान करने के लिए साक्षात्कार की सामग्री का विश्लेषण करना।

इस प्रक्रिया में विश्लेषण होते हैं -
- मुख्य विषयों को स्पष्ट करना
- मुख्य विषयों के लिए कूट निरूपित करना
- मुख्य विषयों के अन्तर्गत प्रतिक्रियाओं को वर्गीकृत करना
- रिपोर्ट के मूलपाठ में विषयों और प्रतिक्रियाओं को संकेतित करना

Field Research
- Group discussion
- Discourse analysis

3.4 Quantitative मात्रात्मक / परिमाणात्मक शोध विधि / मात्रात्मक शोध विधि :-

→ मात्रात्मक या परिमाणात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत पहले उपकल्पना का निर्धारण होता तथा सिद्धांत पहले से ही निर्धारित रहते हैं।

→ शोध तथा आँकड़ों पर आधारित होने के कारण इसका निष्कर्ष भी आकड़ों द्वारा ही निर्धारित होता है।

→ यह अनुसंधान किसी भी प्रकार के भाव से रहित होता है।

→ इस अनुसंधान में सूचना सांख्यिकीय रूप से प्राप्त होती है।

→ यह अनुसंधान संरचित साक्षात्कार, अवलोकन, अभिलेख तथा रिपोर्ट की समीक्षा का डाटा संग्रहण होता है

- Quantitative Data analysis :- यह विधि अच्छी तरह से अभिकल्पित और प्रशासित सर्वेक्षण के लिए शाब्दिक प्रश्नावली का उपयोग करने के लिए सबसे उपयुक्त है।
  - इसमें आंकड़ों का विश्लेषण मैन्युअली या कम्प्यूटर की सहायता से किया जा सकता है।

Quantitative Research design :-

Historical Comparative Research :-

ऐतिहासिक शोध

- इतिहास बीती हुई घटनाओं का एक विश्वसनीय, क्रमबद्ध एवं समन्वित विवरण प्रस्तुत करता है
- इसके अध्ययन का मुख्य प्रयोजन अतीत के बारे में जानना और ऐसी सीख लेना है जो न सिर्फ वर्तमान को सुधारे, बल्कि भविष्य में भी सचेत और सजग रहने की प्रेरणा दे
- किसी के विगत जीवन तथा विकास से सम्बन्धित अतीत को सामने लाकर उससे इस प्रकार की सीख लेने का प्रयत्न किया जाना, जिससे वर्तमान को सँभालने और भविष्य के बारे में उचित नियोजन करने में मदद मिले।

ऐतिहासिक शोध की परिभाषा :- बेस्ट एवं ~~कहन~~ काहन :- ऐतिहासिक शोध वैज्ञानिक विधि का अनुप्रयोग है, जिससे अतीत की घटनाओं का वर्णन और विश्लेषण किया जाता है।

ऐतिहासिक शोध का अर्थ एवं प्रकृति :-

- भूतकालीन वस्तुओं और घटनाओं के अध्ययन से
- उद्‌गम & विकास के सन्दर्भ में उसे जानने & समझने
- अनुसंधानकर्ता इस प्रकार के शोध में अतीत का पुनः सृजन कर, जो बीत गया है उसे फिर अपनी तरह से सबके सामने लाने का प्रयत्न करता है
- → जो घटनाएं घट चुकी है उनका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो सकता और न ही उनकी उसी रूप में पुनरावृत्ति हो सकती है।
- ऐसी अवस्था में शोधकर्ता के पास उनके बारे में जानने का एक ही साधन है और वह उन स्रोतों तक पहुँचना प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से घटित हुई घटना का साक्ष्य प्रदान कर सकते हैं
- → शोधकर्ता द्वारा साक्ष्य/प्रलेख आदि का गहराई से अध्ययन और विश्लेषण करके ऐसे तर्कसंगत निष्कर्ष निकाले जाते हैं जिनसे जो अतीत में घट चुका है उसका सही-सही वर्णन किया जा सके।
- अतीत की घटनाओं की व्याख्या एवं वर्णन करने में शोधकर्ता को कालक्रम का ध्यान रखता है। पर ऐसा करते हुए उसे यह समझना आवश्यक होता है कि घटनाओं को उनके घटने के क्रमानुसार व्यवस्थित करने में ही शोध कार्य पूरा नहीं हो जाता।
- ऐतिहासिक शोध के परिणामों को शोधकर्ता द्वारा ऐसे सामान्यीकरण तथा निष्कर्षित तथ्यों के रूप में लिखा जाता है। जिनमें न केवल वर्तमान घटने वाली घटना को समझने में सहायता मिले, बल्कि भविष्य में घटने वाली घटनाओं का अनुमान लगाया जा सके।
- ऐतिहासिक शोध में घटनाओं के घटने के कालक्रम पर ध्यान देने के अतिरिक्त किसी विचार या दर्शन विशेष के उद्गम, विकास, प्रभाव से सम्बन्धित बातों की ऐतिहासिक खोज/विवेचना।

ऐतिहासिक शोध में प्रयुक्त सोपान :-

- अनुसंधान प्रतिवेदन लेखन
- ↑
- संकलित प्रदत्तों का मूल्यांकन → आंतरिक समीक्षा / समीक्षा
- ↑
- प्रदत्त संकलन → प्राथमिक स्रोत / गौण स्रोत
- ↑
- साहित्य पुनरावलोकन
- ↑
- अनुसंधान परिकल्पनाओं का निर्माण
- ↑
- [अनुसंधान समस्या की पहचान और उसका विशिष्टीकरण]

ऐतिहासिक शोध के क्षेत्र :- जनसंचार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में व्यापक need

- जनसंचार में इसके माध्यम से अतीत की संचार सम्बन्धी दार्शनिक विचारधारा, पद्धतियों, आवश्यकताओं तथा आदर्शों की जानकारी उपलब्ध होती है
- तथा उसके सन्दर्भ में वर्तमान समय में जनसंचार की समस्या तथा व्यवस्था का सन्दर्भ मिलता है

ऐतिहासिक शोध का उद्देश्य :-

- अतीत की विचारधाराओं के क्रमिक विकास का विश्लेषण जो इतिहास के विभिन्न कालों में उदित हुई।
- अतीत की पृष्ठभूमि में इन विचारधाराओं की व्याख्या
- वर्तमान समय की आवश्यकताओं के सन्दर्भ में उनका मूल्यांकन
- सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रों में नीति निर्धारण के मार्गदर्शन में ऐतिहासिक शोध के तथ्यों से विशेष सहायता व सुविधा उत्पन्न होती है
- अतीत की त्रुटियों के प्रति सतर्क
- भविष्य के लिए सचेत

3

Application Research in Electronic Media.

मीडिया : लैटिन भाषा - Medium - माध्यम - सूचनाओं का आदान-प्रदान

मनुष्य प्रवृत्ति और → जिज्ञासु । रुचि
देखें दुनिया घटित घटना
ढूँढना।

मीडिया शोध :- मीडिया शोध, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक पहलुओं तथा विभिन्न मास मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

उदा० - लोग एक विशेष माध्यम के साथ कितना समय बिताते है ?
- यह लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने में प्रभावशाली रहाहै या नहीं ?
- माध्यम के प्रयोग से किस प्रकार का हानिकारक प्रभाव पड़ता है ?
- प्रभाव, प्रौद्योगिकी के कारण है या फिर कार्यक्रम की सामग्री की वजह से ?
- मीडिया उपयोगकर्ता क्या देखना, सुनना, पढ़ना और अनुभव करना चाहता है ?

"मीडिया शोध के अन्तर्गत मीडिया के विभिन्न पक्षों का विकास, उनकी उपलब्धियों एवं प्रभाव पर गहनता से विचार-विमर्श तथा वैज्ञानिक विधि से अध्ययन किया जाता है;

जैसे मीडिया कैसे और क्या कार्य करता है ?
मीडिया में कौन सी तकनीक प्रयोग की जाती है ?
उसकी प्रकृति क्या है।

Use
- ई-शिक्षा में सहायक
- शोध में सहायक
- व्यवसाय में सहायक - विज्ञापन, जागरूकता, etc
- नव चेतना का संचार -
- राजनीति में भागीदारी
- टीचिंग, ब्लॉग और राइटअप
- ब्रांड का निर्माण
- व्यापक सहायता

मीडिया शोध का सिद्धांत

→ मीडिया शोध में मीडिया का विकास, उनकी उपलब्धियाँ और प्रभाव के बारे में अध्ययन की एक पूरी श्रृंखला शामिल है

सिद्धांत
→ निष्पक्षता का सिद्धांत
→ लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का सिद्धांत
→ गोपनीयता की रक्षा का सिद्धांत
→ वैज्ञानिक दृष्टि का सिद्धांत

उद्देश्य
- भ्रमों का निवारण
- नए विचारों का विकास
- समस्याओं का निदान
- प्रतिपुष्टि
- सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन

भारत में मीडिया शोध में प्रमुख चलन

काल	वर्ष	मीडिया	शोध चलन
प्रारम्भिक काल	1947-1960	रेडियो	एक्सटेन्शन स्टडीज, डिफ्यूजन और एडोप्शन प्रोसेस सम्बन्धी अध्ययन
	1961-1970	रेडियो & प्रिन्ट	इम्पैक्ट स्टडीज, डिफ्यूजन एण्ड एडोप्शन प्रोसेस सम्बन्धी अध्ययन
प्रयोगात्मक काल	1971-1980	उपग्रह चैनल	परिवार नियोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा प्रसार में मीडिया की भूमिका
	1981-1990	टेलीविजन & प्रिन्ट	टेलीविजन का प्रभाव एवं दर्शकता, टेलीविजन धारावाहिक - हम लोग टेलीविजन में सामाजिक सन्देश
आधुनिक काल	1991-2000	सिनेमा TV	मीडिया के प्रभाव का अध्ययन
डिजिटल युग	2001-2010	टेलीविजन समाचार नया माध्यम	टेलीविजन समाचारों की विषयवस्तु का विश्लेषण, सिनेमा और अन्य दृश्य माध्यम
	2010-2015	सोशल मीडिया, साम्प्रदायिक माध्यम	गुणात्मक शोध, डिस्कोर्स, स्वालिनित जेण्डर अध्ययन

5.2 संचार शोध का स्वरूप :

→ संचारक स्रोत विश्लेषण Communicator Source analysis :- संचारक और उसके वेगु जो प्रभावी संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है,

- संचारशोधार्थिओं को आकर्षित करते रहते है।
- संचारक स्रोत की विश्वसनीयता, विशेषज्ञता, उद्देश्य और आकर्षण का ऑडियन्स पर प्रभाव पड़ता है।
- संचारक स्रोत विश्लेषण के अन्तर्गत इन सभी कारकों के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

→ सन्देश विश्लेषण :- संदेश की अन्तर्वस्तु का विश्लेषण करना और इसका संचार के अन्य तत्वों के साथ सम्बन्ध मुख्यतः लोगों के व्यवहार, मनोवृत्तियों और मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन संचार शोध का महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है।

- इसे अन्तर्वस्तु की शैली, विस्तार, पठनीयता, प्रभाव, तर्कशीलता और अन्य विशेषताओं के आधार पर जाँचा जाता है।

→ चैनल विश्लेषण :- विभिन्न प्रकार के चैनलों या संचार माध्यमों की विशेषताओं उनकी शक्तियों और सीमाओं, उनकी पहुंच और प्रभाव का अध्ययन भी संचार शोध का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है।

- इसमें संचार सन्देशों के सम्प्रेषण में चैनल माध्यमों की भूमिका का अध्ययन किया जाता है।

ऑडियन्स शोध :- ऑडियन्स की विशेषताओं; जैसे उसका आकार, गठन, भौगोलिक वितरण रुचियों, मनोवृत्तियों, विचारों और व्यवहार (प्रतिक्रिया) का अध्ययन संचार शोध की रुचि का प्रमुख क्षेत्र रहे है।

- ऑडियन्स शोध के अन्तर्गत इन सभी तत्वों का अध्ययन किया जाता
- पाठक सर्वेक्षण और कार्यक्रम की रेटिंग; जैसे टीआरपी, ऐसे शोध कार्य है

प्रक्रिया और प्रभाव शोध : संचार माध्यमों के प्रभाव (विशेषकर संचार प्रक्रिया के विभिन्न तत्वों) का विभिन्न स्तरों - पहुँच व सम्पर्क, व्यापकता, समझ या बोध, स्मृति बोध, स्वीकृति और कार्यवाही पर अध्ययन संचार शोध का महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है।

→ इसके अन्तर्गत संचार माध्यमों के व्यावहारिक और क्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।